हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार 26 अप्रैल 2026

11 केंद्र का किराया आंगनबाड़ी वर्कर्स के

12 खुले दरबार में विधायक ने सुनीं जन समस्याएं

सीबीएलयू ने मनाया 5वां दीक्षांत समारोह, सीजेआई ने 408 विद्यार्थियों को दी डिग्रियां

दीक्षांत समारोह अकादमिक यात्रा का अंत नहीं बल्कि पेशेवर जीवन में प्रवेश का प्रतीक: सूर्यकांत

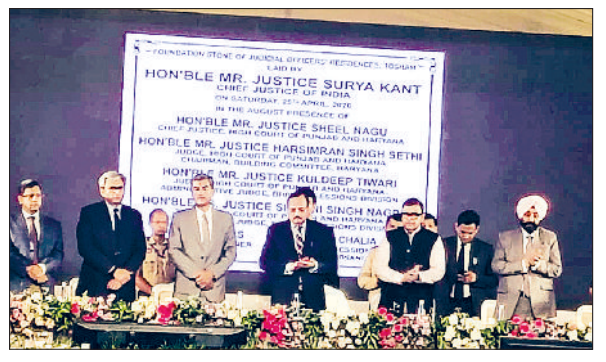

भिवानी। तोशाम के न्यायिक रिहायशी मकानों की आधारशिला रखते हुए।

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 36 मेधावी विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक से अलंकृत किया, जिनमें 31 छात्राएं और 05 छात्र शामिल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी में शनिवार को चौधरी बंसीलाल यूनिवर्सिटी का 5वां दीक्षांत समारोह विश्वविद्यालय के प्रेमनगर स्थित नए परिसर में आयोजित किया गया। दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता महामहिम राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष ने की। देश के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत मुख्यातिथि के रूप में शामिल हुए। दीक्षांत समारोह में पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के मुख्य न्यायधीश शील नागू, प्रदेश के शिक्षा मंत्री महिपाल ढांडा ने बतौर विशिष्ट अतिथि शिरकत की। इस अवसर पर यूजी एवं पीजी के 408 विद्यार्थियों तथा 11 विद्यार्थियों जिनमें 06 छात्राओं एवं 05 छात्रों को पीएचडी की डिग्रियां प्रदान कीं।

इस अवसर पर देश के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा कि दीक्षांत समारोह अकादमिक यात्रा का अंत नहीं, बल्कि पेशेवर जीवन में प्रवेश का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि जहाँ विश्वविद्यालय के वर्ष पाठ्यक्रम और समय-सीमाओं द्वारा निर्देशित होते हैं, वहीं पेशेवर जीवन में स्वतंत्र निर्णय लेने और अपना मार्ग स्वयं तय करने की क्षमता की आवश्यकता होती है। मुख्य न्यायाधीश ने डिग्री धारक विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री विकास पुरुष चौधरी बंसीलाल के साथ अपने प्रसंगों का भी उदाहरण दिया।

दीक्षांत समारोह में कुलगुरु प्रो. दीप्ति धर्माणी ने समस्त विश्वविद्यालय परिवार की ओर से सभी राज्यपाल प्रो असीम कुमार घोष,चीफ जस्टिस न्यायमूर्ति श्री सूर्यकांत एवं सभी अतिथियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय ने अपने गठन के मात्र कुछ वर्षों में ही शिक्षा,अनुसंधान, खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में नए कीर्तिमान स्थापित कर देश में अपनी अलग ही पहचान बनाई है। कार्यक्रम के दौरान सुरक्षा के कड़े इंतजाम रहे और विश्वविद्यालय प्रशासन ने पूरे आयोजन को भव्यता के साथ संपन्न कराया। इस अवसर पर यूजी एवं पीजी के 408 विद्यार्थियों को तथा 11 विद्यार्थियों को पीएचडी की डिग्रियां प्रदान की गईं तथा उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 36 मेधावी विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक से अलंकृत किया गया। शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए 36 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक प्रदान किए गए, जिनमें 31 छात्राएं और 05 छात्र शामिल हैं। इस प्रकार एक बार फिर विश्वविद्यालय की बेटियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर अपना दबदबा कायम रखा।

डिग्री के बाद जीवन की असली परीक्षा होती है शुरू

राज्यपाल एवं कुलाधिपति प्रो. असीम कुमार घोष ने दीक्षांत समारोह में कहा कि यह दिन केवल डिग्री प्राप्त करने का नहीं, बल्कि नए सपनों और जिम्मेदारियों को अपनाने का है। उन्होंने विद्यार्थियों से शिक्षा को व्यावहारिक जीवन में लागू करने का आह्वान किया। महिला सशक्तिकरण की सराहना करते हुए उन्होंने उच्च शिक्षा में छात्राओं की बढ़ती भागीदारी को सकारात्मक बताया। उन्होंने कहा कि डिग्री के बाद जीवन की असली परीक्षा शुरू होती है। युवाओं को अपनी जड़ों से जुड़े रहकर देश की प्रगति में योगदान देना चाहिए और नैतिक मूल्यों के साथ समाज निर्माण में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

दीक्षांत समारोह विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत का प्रतीक

शिक्षा मंत्री महिपाल ढांडा ने विश्वविद्यालय के पांचवें दीक्षांत समारोह में भाग लेकर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि दीक्षांत समारोह केवल डिग्री वितरण नहीं, बल्कि विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत का प्रतीक है। विश्वविद्यालय ने शिक्षा, नवाचार, खेल, सांस्कृतिक गतिविधियों, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किए हैं। छात्राओं ने महिला छात्र संसद में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। गोद लिए गांवों में सामाजिक जागरूकता अभियान भी प्रशंसनीय है। उन्होंने युवाओं से 2047 तक विकसित भारत के निर्माण में सक्रिय योगदान देने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में ये रहे मौजूद

इस अवसर पर जस्टिस रमेश चंद्र डिमरी, जस्टिस यशवीर सिंह राठौर, जस्टिस सूर्यप्रताप सिंह, जस्टिस शालिनी सिंह नागपाल, जस्टिस सुदीप्ति शर्मा, जस्टिस कुलदीप तिवारी, जस्टिस एन एस शेखावत, जस्टिस त्रिभुवन दहिया, जस्टिस संजय वशिष्ठ, जस्टिस विनोद भारद्वाज, जस्टिस संदीप मुदगिल, जस्टिस हरसिमरन सिंह सेठी, जस्टिस दीपक सिब्बल, जस्टिस अश्वनी कुमार मिश्रा की विशेष उपस्थिति रही। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय पाली के कुलगुरु प्रोफेसर टंकेश्वर कुमार, पंडित लख्मीचंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ परफॉर्मिंग एंड विजुअल आर्ट्स रोहतक के कुलगुरु डॉ अमित आर्य,विधायक घनश्याम सर्राफ, विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि, एसीएस हायर एजुकेशन विभाग एके सिंह, पूर्व सूचना आयुक्त भूपेंद्र धर्माणी, पूर्व सूचना आयुक्त डॉ. जगबीर सिंह, शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन डॉ पवन शर्मा, डीसी साहिल गुप्ता, अतिरिक्त उपायुक्त दीपक बाबूलाल, पुलिस अधीक्षक सुमित कुमार, भाजपा जिला अध्यक्ष वीरेंद्र कौशिक भी उपस्थित रहे।

मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने वर्चुअल रखी आधारशिला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

- तोशाम में जजों के चार रिहायशी मकान बनाने के लिए लगभग 6 करोड़ खर्च होंगे
- प्रत्येक मकान 630 स्क्वेयर मीटर में बनेगा जिसमें दो साल लगेंगे

सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने भिवानी से वर्चुअल तरीके से तोशाम के न्यायिक अधिकारियों के लिए रिहायशी मकानों की आधारशिला रखी। हरियाणा में न्यायिक संरचना को सुदृढ़ करने की दिशा में आज एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया। तोशाम में न्यायिक अधिकारियों के आवासों का वर्चुअल माध्यम से शिलान्यास किया गया।

इस समारोह की गरिमा न्यायमूर्ति सूर्यकांत भारत के मुख्य न्यायाधीश, शील नागू मुख्य न्यायाधीश पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय, अश्विनी मिश्रा, न्यायाधीश, पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय माननीय दीपक सिब्बल न्यायाधीश पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय, माननीय हरसिमरन सिंह सेठी न्यायाधीश पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय सह-अध्यक्ष, भवन समिति, हरियाणा, माननीय कुलदीप तिवारी, न्यायाधीश पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय सह-प्रशासनिक न्यायाधीश भिवानी तथा शालिनी सिंह नागपाल न्यायाधीश, पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय सह-प्रशासनिक न्यायाधीश भिवानी, डीसी साहिल गुप्ता की विशेष उपस्थिति रही। तोशाम में एसडीजेएम सुनील कुमार, एसडीएम संदीप कुमार, जिला बार एसोसिएशन के प्रधान एडवोकेट मंदीप काटिया, पूर्व प्रधान सत्यवान श्योराण सहित अधिवक्ता गण व कानूनविद उपस्थित रहे। तोशाम में जजों के चार रिहायशी मकान बनाने के लिए लगभग 6 करोड़ रुपये की धनराशि खर्चे की जाएगी। ये चारों मकान तोशाम बवानी खेड़ा मार्ग पर एक एकड़ एक कनाल 4.7 मरला में प्रति मकान 630 स्क्वेयर मीटर में बनेगा जो कि दो वर्ष बनकर तैयार किए जाएंगे।

चॉक-चौबंद व्यवस्था के बीच पहुंचे सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश

भिवानी। चौक-चौराहों पर तैनात पुलिस। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

- सेक्टर 13 चौक से सचिवालय की तरफ आने वाले वाहनों को डायवर्ट किया

सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत के भिवानी आगमन पर शहर व आसपास के इलाकों में जबरदस्त सुरक्षा व्यवस्था रही। सड़कों पर बने प्वाइंटों, शहर के हर चौक व चौराहों पुलिस की बेरिकेटिंग व नाकाबंदी रही। जिन स्थानों पर नाकाबंदी रही, उन जगहों पर परिंदे को भी पर नहीं मारने दिया। सुबह से लेकर देर शाम तक शहर व आसपास के इलाकों में पुलिस की जबरदस्त नाकाबंदी रही।

पुलिस ने इन नाकों से छान छान कर लोगों को बाहर व भीतर जाने दिया। बल्कि जिस क्षेत्र में सीजेआई सूर्यकांत का कार्यक्रम था। उस इलाके को पहले से ही सील कर दिया गया। पुलिस की चौकस निगाहें हर तरफ थी। शाम को सीजेआई की रवानगी के बाद शहर की नाकाबंदी को थोड़ी सी राहत मिली। इस दौरान पुलिस के आला अधिकारी लगातार नाकाबंदी व अन्य जगहों का निरीक्षण करते नजर आए। यहां यह बताते चले कि सीबीएलयू में दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया था,जिसमें सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए थे। उनके सीबीएलयू में कार्यक्रम के शामिल होने के चलते आज सुबह से ही सीबीएलयू की सुरक्षा व्यवस्था चौकस कर दी थी। अल सुबह नए बाईपास के नीचे बने पुलों के बाहर व भीतर पुलिस तैनात रही। पुलिस ने हर पुल के नीचे बेरिकेटस लगाकर वाहनों की जांच की और जांच पड़ताल पूरी होने के बाद ही वाहनों को आगे निकलने दिया।

यही स्थिति भिवानी के लघु सचिवालय परिसर की रही। दूसरी तरफ सेक्टर 13 चौक से सचिवालय की तरफ आने वाले वाहनों को दूसरे रास्तों से डायवर्ट किया गया। इन जगहों पर भारी पुलिस बल तैनात रहा। इसी तरह हवाई पट्टी व उक्त मार्ग पर पुलिस का जबरदस्त पहरा रहा।

सड़कें चकाचक नजर आई

सीजेआई के आगमन को लेकर शहर की हर सड़क चकाचक नजर आई। किसी भी सड़क पर कोई गड्ढा आदि नजर नहीं आया। उन सभी गड्ढों को सीजेआई के आने से पहले ही तारकोल व रोड़ियों से भर दिया। ताकि सड़क पर यहां से गुजरने वाले किसी भी वाहन चालक को हिचकौले न खाने पड़े। दूसरी तरफ शहर की सड़कों धूल के गुब्बार उठने से बचने के लिए पहले ही पानी का छिड़काव किया गया। इससे पहले मशीनों से सड़क किनारे जमे रेत को एकत्रित करके ट्रैक्टर ट्राली में डाला गया। शहर व सरकूलर रोड चकाचक नजर आए।

सांस्कृतिक सदन में कथक नृत्य कार्यक्रम आज

भिवानी। सांस्कृतिक मंच रविवार की शाम को कथक नृत्य का आयोजन कर रहा है। नूपुर निनाद नाम के कार्यक्रम में नृत्यगुरू विश्वदीप शर्मा देहली तथा प्रयागराज से हिमानी रावत का दल कथक नृत्य की अनुपम प्रस्तुति देगा।

कार्यक्रम संयोजक वन्दना वत्स व दीपक लछिरामका ने बताया कि मंच के संरक्षक डॉक्टर डीवी ढिल्लों के सान्निध्य में आयोजन वातानुकूलित व साउंड प्रूफ सांस्कृतिक सदन में किया जा रहा है। कार्यक्रम में कथक कलाकार विपिन शर्मा की टीम गणेश वन्दना के साथ शुरूआत करेंगे। आयोजन में डॉक्टर कुलदीप सूद, अग्रवाल वैश्य समाज हरियाणा के अध्यक्ष व आदर्श महिला महाविद्यालय के महासचिव अशोक बुवानीवाला, अविनाश सरदाना एडवोकेट, रजनीश सोनी, आदित्य शर्मा तिगड़ाना अतिथि के रूप में पधार रहे हैं।

टोल को लेकर आज होगी महापंचायत, सौंपी जिम्मेदारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

दस किलोमीटर के एरिया के गांवों के लिए टोल फ्री करवाने की मांग

बवानी खेड़ा टोल प्लाजा पर बवानीखेड़ा व आसपास के इलाके के दस किलोमीटर के दायरे में रहने वाले वाहन चालकों का टोल फ्री करवाए जाने की मांग को लेकर 26 अप्रैल को बवानीखेड़ा के टोल प्लाजा पर महापंचायत का आयोजन किया जाएगा। यह महापंचायत सुबह दस बजे शुरू होगी और इस दौरान एनएचआई व टोल अधिकारियों से टोल फ्री करवाने की मांग की जाएगी। अगर वे उनकी मांगों को दरकिनार करते है तो वे महापंचायत में अन्य लोगों से सलाह मशविरा करके आंदोलन का ऐलान किया जाएगा। इसी क्रम में आज हरियाणा जागृति मोर्चा ने अन्य सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर जनसम्पर्क अभियान चलाया। लोगों को उक्त महापंचायत में अधिक से अधिक संख्या में पहुंचने का न्यौता दिया।मोर्चा के अध्यक्ष राजेश सिंधू ने बताया कि अभी तक नए बाईपास के निर्माण कार्य पूरा नहीं हुआ है,लेकिन टोल पर वाहन चालकों से टोल वसूलना आरंभ कर दिया है। जो पूरी तरह से गलत है। साथ ही उन्होंने बताया कि बवानीखेड़ा इलाके में अनेक जगहों पर बाईपास के साथ सर्विस रोड नहीं बनाए गए। जिस वजह से अनेक किसानों के खेतों में जाने का रास्ता बंद हो गया है। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर इन दोनों मांगों का समाधान नहीं हुआ तो वे कल ही अनिश्चतकालीन आंदोलन का ऐलान कर देंगे।

भिवानी। महापंचायत को लेकर ड्यूटी सौंपते हुए। फोटो : हरिभूमि

ये रहे मौजूद

इस मौके पर टैक्सी स्टैंड यूनियन के संयोजक जोगेंद्र शर्मा, मुकेश, कर्मचारी संघ के प्रतिनिधि हनुमान रोहिला, बनवारी लाल, मोर्चा के हलका जयबीर आल्हान, संजय,प्रदीप, मोंटी, कुलदीप, राहुल व बलबीर रेढू आदि मौजूद थे।

भगवान परशुराम जन्मोत्सव पर रागनी कार्यक्रम आज

चरखी दादरी। शनिवार को सुबह आठ बजे से दादरी शहर की धर्मशाला में भगवान परशुराम जन्मोत्सव शुरू होगा। ब्राह्मण सभा उन्नीस गांव के प्रधान बिजेंद्र शर्मा ढाणी फोगाट ने बताया कि सुबह सवा आठ बजे यज्ञ होगा और इसके बाद प्रसाद वितरण किया जाएगा।

10 बजे शुरू होगा कार्यक्रम

शर्मा ने बताया कि सुबह 10 बजे शुरू होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम में लोकगायक राजेश थुरानिया भजन एवं रागनियों की प्रस्तुति देंगे। समारोह में विधायक कुलदीप वत्स बतौर मुख्यतिथि शिरकत करेंगे और अध्यक्षता संदीप जोशी की होगी। ब्राह्मण सभा उन्नीस गांव की कार्यकारिणी ने क्षेत्र के लोगों से कार्यक्रम में ज्यादा से ज्यादा संख्या में पहुंचने की अपील की है।

जनसंघर्ष समिति ने स्वास्थ्य विभाग के डायरेक्टर को भेजा ज्ञापन

चौधरी बंसीलाल अस्पताल में ओपीडी शुरू करने की मांग

- जनसंघर्ष समिति के नेतृत्व में इससे पहले भी अनेक मांगों को लेकर प्रदर्शन किया जा चुका

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

जनसंघर्ष समिति ने चौधरी बंसीलाल नागरिक अस्पताल में शीघ्र ओपीडी शुरू करने तथा अल्ट्रासाउंड मशीन सहित दूसरे डॉक्टर की नियुक्ति की पुनः मांग उठाई। जनसंघर्ष समिति के नेतृत्व में इससे पहले भी खराब पड़ी लिफ्टों की जगह चार नई लिफ्ट लगवाने, अस्पताल में बंद की गई ओपीडी पुनः चालू करने के लिए अनेक बार प्रदर्शन किए हैं और मुख्यमंत्री, स्वास्थ्य मंत्री, स्वास्थ्य विभाग डायरेक्टर, उपायुक्त व सीएमओ को अनेक बार ज्ञापन सौंपें हैं। आंदोलन के एक वर्ष बाद चार खराब लिफ्टों की जगह केवल दो नई लिफ्टें लगाई हैं, अभी भी दो लिफ्त खराब पड़ी है। जनसंघर्ष समिति के संयोजक कामरेड ओमप्रकाश व व्यापारी नेता देवराज मेहता ने स्वास्थ्य विभाग के डायरेक्टर डॉ. ब्रह्मदीप को ज्ञापन भेजा और उपरोक्त मांगों को शीघ्र लागू करवाने की मांग की। गौरतलब है कि स्वास्थ्य विभाग के डायरेक्टर डॉ. ब्रह्मदीप 22 अप्रैल को नागरिक अस्पताल के निरीक्षण के लिए भिवानी आए थे और उन्होंने ओपीडी विभाग का निरीक्षण कर सीएमओ को निर्देश दिए कि नागरिक अस्पताल का नवीनीकरण हो चुका है और ओपीडी हॉल में सभी डाक्टरों के रूम निश्चित कर उन्हें यहां ओपीडी ड्यूटी के शीघ्र निर्देश दें, ताकि अस्पताल में सफलतापूर्वक मरीजों की देखभाल और इलाज सुचारू रूप से हो सके। समिति नेताओं ने कहा कि पहले नागरिक अस्पताल ठीक चलता था, लेकिन बगैर विशिष्ट डॉक्टरों की भर्ती के आनन-फानन में मेडिकल कालेज शुरू कर दिया तो नागरिक अस्पतात के डॉक्टरों को मेडिकल कॉलेज में बैठाकर अस्पताल को ठप कर दिया, ये मरीजों हित में नहीं था। विशिष्ट डॉक्टरों की सेवाओं के अभाव में अभी भी गंभीर मरीजों को रोहतक पीजीआई में भेजा जा रहा है। भिवानी के मरीजों को कोई सुविधा नहीं मिल रही है। वहीं अल्ट्रासाउंड का एक डॉक्टर होने से महीनेभर की तारीख मरीजों को दी जाती है, जबकि बीमारी गंभीर होने पर गरीब मरीजों को प्राईवेट सेंटरों पर 800 रुपये प्रति अल्ट्रासाउंड जांच के लिए देने पड़ते है। इसके अलावा रेनोवेशन के बाद मैन गेट बंद कर दिए गए, जच्चा-बच्चा वार्ड में एंबुलेंस भी आती है तो उसे इमरजेंसी गेट से घूमाकर लाया जाता हैं, जबकि मैन गेट बंद करने का कोई औचित्य नहीं है। यह गेट बंद रहने से ठेली वालों और थ्री व्हीलर वालों का जमावड़ा होकर मुख्य सड़क का रास्ता ब्लाक हो जाता है।

ट्रक और कार की भिड़ंत में कार सवार दो व्यक्ति घायल

बवानी खेड़ा। कस्बे में शनिवार दोपहर के करीब मालवाहक ट्राले की टाटा पंच गाड़ी से भिड़ंत हो गई। जिसमें गाड़ी सवार दो युवकों को सिर और हाथ में चोटें आई। इलाज के लिए उन्हें राहगीर मदद से हॉस्पिटल ले जाया गया। दोनों वाहनों की सड़क के बीचों-बीच भिड़ंत होने से सड़क यातायात गति धीमी पड़ गई जिसको लेकर डायल 112 पुलिस टीम ने दुर्घटनाग्रस्त वाहनों को व्यवस्थित किया।

अस्पताल में करवाया भर्ती

डायल 112 इंचार्ज राजबीर मलिक ने बताया कि आज दोपहर दो वाहनों की भिड़ंत की उन्हें सूचना प्राप्त हुई थी। हादसे में पंच गाड़ी सवार दो चोटिल बताए जा रहे है जिन्हें इलाज के लिए बवानी खेड़ा हॉस्पिटल में ले जाया गया। बताया जाता है कि मालवाहक ट्राला भिवानी की तरफ आ रहा था जबकि पंच गाड़ी भिवानी से हांसी की तरफ जा रही थी। फिलहाल पुलिस ने हादसे की वजह जांच आरंभ कर दी है।

सोना-चांदी या मल्टी-एसेट फंड? निवेश से पहले जानें पूरा गणित

- उच्च रिटर्न के लालच में न करें गलती, जोखिम और रिटर्न का संतुलन ही समझदारी
- बाजार की चाल, जोखिम और लक्ष्य के हिसाब से चुनें सही विकल्प, वरना होगा नुकसान
- गोल्ड ईटीएफ, कमोडिटी फंड और मल्टी-एसेट फंड के फर्क को समझना गेहद जरूरी
- कमोडिटी फंड्स वास्तव में सीधे सोने या चांदी में निवेश नहीं करते
- ये उन कंपनियों के शेयरों में पैसा लगाते हैं जो माइनिंग, मेटल या एनर्जी सेक्टर से जुड़ी

शेयर बाजार और फिक्स्ड डिपॉजिट से आगे बढ़ते हुए अब निवेशक सोना, चांदी, मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड और अन्य कमोडिटी विकल्पों की ओर तेजी से रुख कर रहे हैं। महंगाई, वैश्विक अनिश्चितता और बाजार में उतार-चढ़ाव के दौर में ये एसेट क्लास पोर्टफोलियो को संतुलन देने का काम करते हैं। लेकिन समस्या तब पैदा होती है, जब निवेशक अलग-अलग विकल्पों कमोडिटी फंड, गोल्ड-सिल्वर ईटीएएफ और मल्टी-एसेट फंड को एक जैसा मान लेते हैं। यही भ्रम कई बार गलत निवेश फैसलों और नुकसान की वजह बनता है। सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि कमोडिटी फंड्स वास्तव में सीधे सोने या चांदी में निवेश नहीं करते। ये फंड उन कंपनियों के शेयरों में पैसा लगाते हैं जो माइनिंग, मेटल या एनर्जी सेक्टर से जुड़ी होती हैं। यानी इनका प्रदर्शन केवल कमोडिटी की कीमत पर नहीं, बल्कि उन कंपनियों के बिजनेस, मैनेजमेंट और मार्केट कंडीशन पर भी निर्भर करता है। इस कारण ये फंड तकनीकी रूप से इक्विटी फंड की श्रेणी में आते हैं और इनमें जोखिम भी उसी के अनुरूप अधिक होता है।

कमोडिटी फंड : हाई रिस्क, साइकिल पर निर्भर रिटर्न

कमोडिटी फंड्स का प्रदर्शन "कमोडिटी साइकिल" पर आधारित होता है। जब मेटल या एनर्जी सेक्टर में तेजी आती है, तो ये फंड अच्छा रिटर्न दे सकते हैं, लेकिन गिरावट के समय इनका प्रदर्शन तेजी से नीचे भी आ सकता है। यही वजह है कि विशेषज्ञ इन्हें लॉन्ग टर्म कोर इन्वेस्टमेंट के रूप में नहीं देखते। आमतौर पर 1 से 3 साल के लिए, किसी खास सेक्टर में तेजी का फायदा उठाने के लिए ही इनका उपयोग किया जाता है। निवेश सलाहकारों के अनुसार, पोर्टफोलियो में इनका हिस्सा 5% से 10% से ज्यादा नहीं होना चाहिए। अधिक निवेश जोखिम को बढ़ा सकता है। साथ ही, इनमें निवेश करने से पहले बाजार की स्थिति और सेक्टर ट्रेंड को समझना बेहद जरूरी है।

गोल्ड और सिल्वर ईटीएएफ कीमत से जुड़ा निवेश

अगर आपका उद्देश्य सीधे सोने या चांदी की कीमतों में होने वाले बदलाव का लाभ उठाना है, तो गोल्ड ईटीएएफ और सिल्वर ईटीएएफ बेहतर विकल्प हैं। ये फंड फिजिकल गोल्ड या सिल्वर की कीमत को ट्रैक करते हैं, यानी इनका रिटर्न सीधे धातु की कीमत पर निर्भर करता है। इनका सबसे बड़ा फायदा यह है कि आपको फिजिकल गोल्ड खरीदने, स्टोर करने या उसकी सुरक्षा की चिंता नहीं करनी पड़ती। साथ ही, इनकी पारदर्शिता और लिक्विडिटी भी अधिक होती है, क्योंकि इन्हें शेयर बाजार में आसानी से खरीदा और बेचा जा सकता है। हालांकि, इनका रिटर्न आमतौर पर स्थिर और सीमित होता है। ये तेजी से मल्टीबैगर रिटर्न देने के बजाय पोर्टफोलियो को स्थिरता देने का काम करते हैं। इसलिए इन्हें "सेफ हेवन" या हेजिंग टूल के रूप में देखा जाता है।

मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड : संतुलित निवेश का विकल्प

दूसरी ओर, मल्टी-एसेट एलोकेशन फंड उन निवेशकों के लिए बेहतर विकल्प हैं, जो एक ही निवेश में विविधता (डाइवर्सिफिकेशन) चाहते हैं। ये फंड इक्विटी, डेट और कमोडिटी तीनों एसेट क्लास में निवेश करते हैं। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि जब एक एसेट क्लास कमजोर प्रदर्शन करता है, तो दूसरा उसे संतुलित कर देता है। उदाहरण के लिए, शेयर बाजार में गिरावट के दौरान सोना बेहतर प्रदर्शन कर सकता है, जिससे कुल पोर्टफोलियो पर असर कम होता है।

पिछले आंकड़ों पर न जाएं

बाजार में आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड, एसबीआई म्यूचुअल फंड और क्वांट म्यूचुअल फंड जैसे कई कमोडिटी या मल्टी-एसेट फंड्स उपलब्ध हैं, जिन्होंने पिछले कुछ वर्षों में 20-22% तक का रिटर्न दिया है, लेकिन विशेषज्ञ साफ कहते हैं कि केवल पिछले प्रदर्शन के आधार पर निवेश का फैसला लेना गलत हो सकता है। कमोडिटी सेक्टर स्वभाव से ही अस्थिर होता है। इसलिए इसमें औसतन 10-12% सीएजीआर की उम्मीद रखना ज्यादा व्यावहारिक है।

समझदारी से करें संतुलन

निवेश का कोई एक "सही" विकल्प नहीं होता। यह पूरी तरह आपके लक्ष्य, जोखिम क्षमता और निवेश अवधि पर निर्भर करता है। गोल्ड ईटीएफ और मल्टी-एसेट फंड्स आम निवेशकों के लिए बेहतर और सुरक्षित विकल्प माने जाते हैं, जबकि कमोडिटी फंड्स केवल समझदार और अनुभवी निवेशकों के लिए ही उपयुक्त हैं। अंततः, एक संतुलित पोर्टफोलियो ही लंबे समय में बेहतर रिटर्न और कम जोखिम सुनिश्चित करता है। इसलिए निवेश से पहले जरूरतें समझें, जल्दबाजी से बचें और जहां जरूरी हो, वित्तीय सलाहकार की मदद लें ताकि आपका पैसा सही दिशा में काम कर सके।

स्मॉलकैप एक माह में 10% उछला

जोखिम भी उतना ही बढ़ा

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

पिछले एक महीने में स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड्स ने निवेशकों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। औसतन 10% तक का रिटर्न देकर इस सेगमेंट ने लार्ज और मिडकैप फंड्स को पीछे छोड़ दिया है। ऐसे में कई निवेशकों के मन में सवाल उठ रहा है क्या यह तेजी लंबे समय के बुल रन की शुरुआत है या फिर यह सिर्फ गिरावट के बाद आई एक अस्थायी रिकवरी? विशेषज्ञों का मानना है कि इस तेजी को समझदारी से देखना जरूरी है, क्योंकि जल्दबाजी में लिया गया फैसला नुकसान भी करा सकता है। हालिया आंकड़ों के मुताबिक, स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड्स ने पिछले एक महीने में औसतन करीब 10% रिटर्न दिया है। कुछ फंड्स ने तो इससे भी ज्यादा प्रदर्शन किया है, जिससे निवेशकों का भरोसा इस सेगमेंट में फिर से बढ़ा है। हालांकि, सभी फंड्स का प्रदर्शन एक जैसा नहीं रहा। जहां कुछ फंड्स ने दो अंकों का रिटर्न दिया, वहीं कुछ ने नेगेटिव रिटर्न भी दिखाया। इससे साफ है कि यह तेजी पूरे सेगमेंट में समान रूप से नहीं फैली है।

तेजी की वजहः लिक्विडिटी और एसआईपी का सहारा

विशेषज्ञों के अनुसार, स्मॉलकैप फंड्स में आई इस तेजी के पीछे कई कारण हैं। बाजार में बढ़ती लिक्विडिटी, निवेशकों की जोखिम लेने की क्षमता में सुधार और लगातार आने वाला एसआईपी निवेश इस उछाल को सपोर्ट कर रहा है। जब बाजार में नकदी ज्यादा होती है, तो उसका असर छोटे शेयरों पर जल्दी दिखाई देता है। इसी वजह से स्मॉलकैप शेयरों में तेजी अक्सर तेज और अचानक होती है।

क्या यह स्थायी बुल रन है या शॉर्ट टर्म रिकवरी?

यहीं सबसे बड़ा सवाल खड़ा होता है। एक्सपर्ट्स का मानना है कि फिलहाल यह तेजी एक शॉर्ट टर्म रिकवरी ज्यादा लगती है, न कि लंबी अवधि की स्थायी तेजी। स्मॉलकैप सेगमेंट में उतार-चढ़ाव ज्यादा होता है। गिरावट के बाद तेज उछाल आना आम बात है। इसलिए केवल एक महीने के रिटर्न के आधार पर निवेश का फैसला लेना जोखिम भरा हो सकता है।

वैल्यूएशन बनी चिंता

हालिया तेजी के बाद स्मॉलकैप शेयरों की वैल्यूएशन फिर से ऊंची नजर आने लगी है। उदाहरण के तौर पर, निफ्टी स्मॉलकैप 100 का फॉरवर्ड पी/ई अपने लंबे औसत से ऊपर चल रहा है। इसका मतलब है कि शेयरों की कीमतें उनकी कमाई के मुकाबले ज्यादा हो चुकी हैं। ऐसे में आगे रिटर्न सीमित हो सकता है या फिर बाजार में करेक्शन देखने को मिल सकता है।

हर निवेशक के लिए सही नहीं

स्मॉलकैप फंड्स हाई रिस्क कैटेगरी में आते हैं। इनमें तेजी के साथ-साथ गिरावट भी उतनी ही तेज होती है। इसलिए यह हर निवेशक के लिए उपयुक्त नहीं हैं। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि अगर आपका निवेश समय 7 से 10 साल या उससे ज्यादा है, तभी इस सेगमेंट में निवेश करना चाहिए।

एसआईपी और एसटीपी से एंट्री

स्मॉलकैप में एकमुश्त निवेश करने के बजाय एसआईपी या एसटीपी के जरिए धीरे-धीरे निवेश करना बेहतर रणनीति मानी जाती है। इससे बाजार के उतार-चढ़ाव का असर कम होता है और आप अलग-अलग स्तरों पर निवेश कर पाते हैं, जिससे औसत लागत संतुलित रहती है।

पोर्टफोलियो में सीमित हिस्सा

एक संतुलित निवेश रणनीति के तहत स्मॉलकैप फंड्स का हिस्सा पोर्टफोलियो में सीमित रखना चाहिए। आमतौर पर 10% से 20% तक का एक्सपोजर पर्याप्त माना जाता है, जो जोखिम और रिटर्न के बीच संतुलन बनाए रखता है। इसके अलावा, फ्लेक्सी कैप और मल्टीकैप फंड्स जैसे विकल्प भी बेहतर संतुलन प्रदान कर सकते हैं।

पीछे भागना क्यों खतरनाक

अक्सर निवेशक हालिया प्रदर्शन देखकर आकर्षित हो जाते हैं और तेजी से निवेश कर देते हैं। लेकिन 10% जैसे अल्पकालिक रिटर्न का पीछा करना सही रणनीति नहीं है। बाजार में ऐसे मूवमेंट अस्थायी होते हैं और समय के साथ संतुलित हो जाते हैं। इसलिए केवल हालिया रिटर्न देखकर निवेश करना नुकसान का कारण बन सकता है।

अवसर है, पर अलर्ट रहें

स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड्स में हालिया तेजी निश्चित रूप से ध्यान देने योग्य है, लेकिन इसे "पैसे छापने का मौका" मानना जल्दबाजी होगी। लंबी अवधि के निवेशक एसआईपी के जरिए इसमें धीरे-धीरे निवेश कर सकते हैं, लेकिन पोर्टफोलियो में संतुलन बनाए रखना बेहद जरूरी है।

एमएफ के नाम में छिपा पूरा खेल : 'डायरेक्ट रेगूलर और ग्रोथ' का सही मतलब समझें

म्यूचुअल फंड में निवेश करना आजकल बहुत आसान हो गया है, लेकिन सही फंड का चुनाव करना आज भी कई लोगों के लिए बड़ी चुनौती है। बता दें कि जब आप किसी ऐप या वेबसाइट पर फंड सर्च करते हैं, तो एक ही नाम के कई ऑप्शन नजर आते हैं। दरअसल, इन नामों में निवेश की पूरी रणनीति छिपी होती है। अगर आप इन बेसिक शब्दों का मतलब समझ लेते हैं, तो आप अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुसार सही फंड का चुनाव कर सकते हैं।

निवेश की कैटेगरी को पहचानें

म्यूचुअल फंड के नाम की शुरुआत एएमसी से होती है, जैसे एसबीआई, अक्षम या आईसीआईसीआई प्रूडेंटियल। यह वो संस्था है जो आपके पैसे को मैनेज करती है। नाम के अगले हिस्से में फंड की कैटेगरी होती है। जैसे लार्ज कैप का अर्थ है कि पैसा देश की टॉप 100 सुरक्षित कंपनियों में लगेगा। वहीं, स्मॉल कैप या मिड कैप में पैसा उन कंपनियों में लगाया जाता है जो तेजी से बढ़ रही हैं, हालांकि इनमें जोखिम थोड़ा ज्यादा होता है।

खर्च और मुनाफे का अंतर

फंड के नाम में डायरेक्ट और रेगूलर सबसे अहम शब्द हैं। डायरेक्ट का मतलब है कि आप सीधे फंड हाउस के साथ निवेश कर रहे हैं। इसमें कोई एजेंट नहीं होता, इसलिए एक्सपेंस रेशियो कम होता है और आपका मुनाफा बढ़ जाता है। इसके विपरीत, रेगूलर प्लान किसी बैंक या ब्रोकर के जरिए लिया जाता है, जहां आपको दी जाने वाली सुविधाओं के बदले कंपनी एजेंट को कमीशन देती है, जिससे आपका शुद्ध मुनाफा थोड़ा कम हो जाता है।

रिटर्न पाने का तरीका चुनें

नाम के आखिरी हिस्से में आपको ग्रोथ या आईडीडब्ल्यूसी लिखा मिलेगा। बता दें कि अगर आप लंबे समय के लिए पैसा जोड़ना चाहते हैं, ग्रोथ ऑप्शन चुनें क्योंकि इसमें मुनाफे पर कंपाउंडिंग का लाभ मिलता है। लेकिन अगर आप चाहते हैं कि आपको निवेश के बीच-बीच में कुछ कमाई मिलती रहे, तो आईडीडब्ल्यूसी प्लान लिया जा सकता है।

स्मार्ट निवेशक बनने के लिए जरूरी टिप्स

म्यूचुअल फंड चुनते समय सिर्फ पिछले रिटर्न को ना देखें, बल्कि इन चारों यानी एएमसी, कैटेगरी, प्लान टाइप और रिटर्न मोड को परखें। अपनी रिस्क लेने की क्षमता और समय सीमा के आधार पर ही सही ऑप्शन का चुनाव करें। हमेशा कोशिश करें कि डायरेक्ट और ग्रोथ ऑप्सशन पर गौर करें जिससे लंबी समय में आपकी जमा पूंजी पर कमीशन का बोझ न पड़े और आपको अधिकतम लाभ मिल सके। म्यूचुअल फंड का नाम भले ही जटिल लगे, लेकिन इसमें निवेश का पूरा ब्लूप्रिंट छिपा होता है। म्यूचुअल फंड में सफल होने के लिए जरूरी है कि आप इन बुनियादी शब्दों को समझें और सोच-समझकर फैसला लें। सही जानकारी के साथ किया गया निवेश ही लंबे समय में संपत्ति निर्माण का मजबूत आधार बनता है।

बिजनेस डेस्क

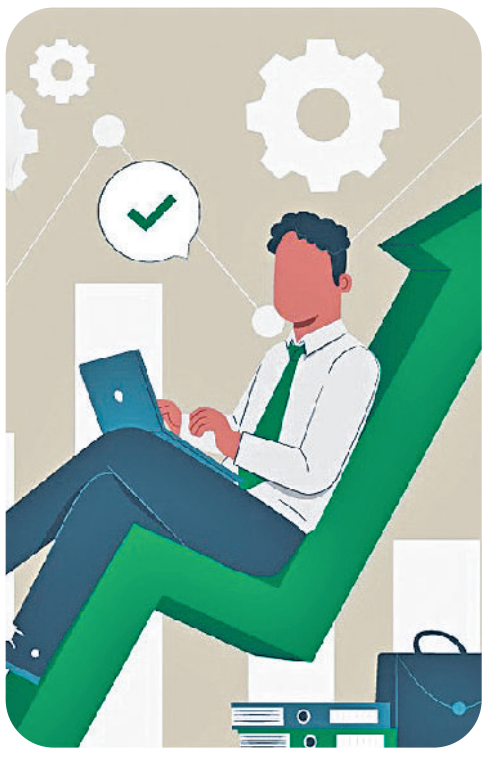

अब आईटीआर में गलती की तो पड़ सकती है भारी

गलत इनकम बताई तो 200% तक जुर्माना

- छोटी चूक भी बन सकती है बड़ी सजा का कारण
- जानबूझकर जानकारी छिपाने पर दोगुना तक जुर्माना
- लेट फाइलिंग व दस्तावेजों में कमी पर भी कड़ा प्रावधान

बिजनेस डेस्क

आयकर रिटर्न यानी आईटीआर भरना अब केवल एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं रह गया है, बल्कि यह पूरी तरह जिम्मेदारी और सतर्कता का काम बन चुका है। आयकर विभाग ने असेसमेंट ईयर 2026–27 के लिए नया पेनल्टी फ्रेमवर्क लागू किया है, जिसमें गलत जानकारी देने वाले टैक्सपेयर्स पर कड़ी कार्रवाई का प्रावधान किया गया है। इस नए सिस्टम का मकसद साफ है। टैक्स अनुपालन को सख्ती से लागू करना और किसी भी तरह की लापरवाही या हेरफेर को हतोत्साहित करना।

गलत इनकम दिखाना पड़ सकता है भारी

नए नियमों के तहत यदि कोई टैक्सपेयर्स अपनी वास्तविक आय से कम इनकम दिखाता है, तो उसे देय टैक्स पर 50 प्रतिशत तक जुर्माना भरना पड़ सकता है। यह जुर्माना उन मामलों में लागू होता है जहां गलती को अनजाने में हुई चूक माना जाता है। लेकिन अगर जांच में यह साबित हो जाता है कि इनकम को जानबूझकर छिपाया गया है या गलत जानकारी दी गई है, तो सजा और भी कड़ी हो जाती है। ऐसे मामलों में पेनल्टी बढ़ाकर 200 प्रतिशत तक की जा सकती है। यानी जितना टैक्स बचाने की कोशिश की गई, उसका दोगुना तक जुर्माना देना पड़ सकता है।

जानबूझकर गलती और सामान्य चूक में फर्क

सरकार ने इस बार नियमों में यह स्पष्ट किया है कि जानबूझकर की गई गलती और सामान्य त्रुटि में अंतर किया जाएगा। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति ने भूलवश कोई इनकम जोड़ना रह गया, तो उसे उतनी सख्ती से नहीं देखा जाएगा जितना कि किसी ऐसे मामले को जहां दस्तावेज छिपाए गए हों या फर्जी एंट्री की गई हो। यह अंतर इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे ईमानदार टैक्सपेयर्स को राहत मिलती है, जबकि धोखाधड़ी करने वालों पर सख्ती बढ़ती है।

लेट आईटीआर पर भी सख्त नियम

समय पर आईटीआर फाइल न करने पर भी अब जुर्माने का प्रावधान पहले से स्पष्ट और कड़ा कर दिया गया है। यदि कोई व्यक्ति तय समय सीमा के बाद आईटीआर भरता है, तो उसे अधिकतम 5000 रुपये तक का जुर्माना देना पड़ सकता है। हालांकि, जिन टैक्सपेयर्स की सालाना आय 5 लाख रुपये तक है, उनके लिए राहत देते हुए जुर्माना 1000 रुपये तक सीमित रखा गया है। इसका उद्देश्य छोटे करदाताओं को अनावश्यक बोझ से बचाना है, लेकिन समय पर फाइलिंग की जिम्मेदारी से छूट नहीं दी गई है।

टीडीएस और अन्य दस्तावेजों में देरी भी महंगी

सिर्फ आईटीआर ही नहीं, बल्कि टीडीएस और अन्य जरूरी स्टेटमेंट समय पर जमा न करने पर भी सख्त कार्रवाई का प्रावधान है। ऐसे मामलों में 200 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से जुर्माना लगाया जा सकता है, जो समय के साथ बड़ी राशि में बदल सकता है। इससे साफ है कि टैक्स सिस्टम अब पूरी तरह समयबद्ध और अनुशासित हो चुका है, जहां हर देरी की कीमत चुकानी पड़ सकती है।

टैक्स बकाया रखने पर भी कार्रवाई

यदि कोई व्यक्ति अपना सेल्फ-असेसमेंट टैक्स समय पर नहीं चुकाता है, तो उस पर भी पेनल्टी लग सकती है। यह पेनल्टी असेसिंग ऑफिसर द्वारा तय की जाती है और कई मामलों में बकाया टैक्स के बराबर तक हो सकती है। गंभीर मामलों में, खासकर जब जांच के दौरान छिपी हुई आय सामने आती है, तो 10 प्रतिशत से लेकर 60 प्रतिशत तक अतिरिक्त जुर्माना भी लगाया जा सकता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि गलती कितनी गंभीर है और उसे कब उजागर किया गया।

अन्य उल्लंघनों पर कड़ी नजर

नए नियम केवल इनकम छिपाने तक सीमित नहीं हैं। यदि कोई व्यक्ति अपने अकाउंट बुक्स ठीक से नहीं रखता, जरूरी ऑडिट नहीं कराता, दस्तावेज समय पर जमा नहीं करता या कैश ट्रांजैक्शन के नियमों का उल्लंघन करता है, तो उस पर भी जुर्माना लगाया जा सकता है। कुछ मामलों में यह जुर्माना लेन-देन की पूरी राशि के बराबर तक हो सकता है, जो किसी भी व्यवसाय या व्यक्ति के लिए बड़ा वित्तीय झटका साबित हो सकता है।

राहत के प्रावधान भी मौजूद

हालांकि सख्ती के बीच सरकार ने कुछ राहत के विकल्प भी दिए हैं। यदि कोई टैक्सपेयर्स यह साबित कर देता है कि उससे हुई गलती किसी वाजिब कारण से हुई थी, जैसे तकनीकी समस्या या वास्तविक भूल, तो उस पर पेनल्टी नहीं लगाई जाएगी। इसके अलावा, कुछ मामलों में अपील और स्पष्टीकरण के आधार पर भी जुर्माने में राहत मिल सकती है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि ईमानदार करदाता अनावश्यक रूप से परेशान न हों।

सतर्कता ही बचाव का सबसे बड़ा तरीका

इन नए नियमों के बाद यह साफ हो गया है कि आईटीआर भरते समय लापरवाही की कोई गुंजाइश नहीं है। हर जानकारी को सही दस्तावेजों के साथ जांचकर ही भरना चाहिए। विशेषज्ञों की सलाह है कि यदि टैक्स फाइलिंग को लेकर किसी भी तरह का संदेह हो, तो पेशेवर सलाह लेना बेहतर है। छोटी सी गलती भी बड़े जुर्माने में बदल सकती है, इसलिए सतर्क रहना ही सबसे सुरक्षित विकल्प है।

आयकर विभाग का स्पष्ट संदेश

नए पेनल्टी नियम यह संकेत देते हैं कि टैक्स सिस्टम अब ज्यादा पारदर्शी और सख्त हो चुका है। आयकर विभाग का स्पष्ट संदेश है ईमानदारी से टैक्स भरें या भारी जुर्माने के लिए तैयार रहें। ऐसे में समझदारी इसी में है कि जल्दबाजी या लापरवाही से बचते हुए पूरी सावधानी के साथ आईटीआर फाइल किया जाए, क्योंकि अब छोटी गलती भी बड़ी सजा में बदल सकती है।

25,000 की एसआईपी के लिए 3 से 5 फंड ही काफी

छोटी एसआईपी में बंटवारे से कंपाउंडिंग पर पड़ता है असर

म्यूचुअल फंड पोर्टफोलियो में भीड़ बढ़ाना पड़ सकता है भारी, घट सकता है रिटर्न

बिजनेस डेस्क

अक्सर निवेशक यह मान लेते हैं कि ज्यादा म्यूचुअल फंड्स में पैसा लगाने से जोखिम कम हो जाता है और रिटर्न बेहतर मिलता है। इसी सोच के चलते कई लोग 10 से 12 या उससे भी ज्यादा फंड्स में एसआईपी शुरू कर देते हैं। लेकिन हकीकत इससे उलट है। जरूरत से ज्यादा फंड्स रखने से न तो जोखिम कम होता है और न ही रिटर्न बढ़ता है, बल्कि आपका पोर्टफोलियो उलझ जाता है और मुनाफा कम हो सकता है। खासतौर पर अगर आपकी मासिक एसआईपी 25,000 रुपये के आसपास है, तो 3 से 5 अच्छे फंड्स का चयन ही बेहतर रणनीति मानी जाती है।

ज्यादा फंड्स रखना क्यों नुकसान का सौदा

म्यूचुअल फंड निवेश का मूल सिद्धांत है। विविधता, लेकिन कई निवेशक इस सिद्धांत को गलत तरीके से समझ लेते हैं। वे सोचते हैं कि अलग-अलग (एसेट मैनेजमेंट कंपनी) के ज्यादा फंड्स खरीदना ही विविधता है, जबकि ऐसा नहीं है। अगर आपके पास 10–12 फंड्स हैं, तो संभव है कि उनमें से कई एक ही सेक्टर या एक जैसे शेयरों में निवेश कर रहे हों। ऐसे में आपका पोर्टफोलियो देखने में तो बड़ा लगता है, लेकिन असल में वह विविध नहीं होता। विशेषज्ञ मानते हैं कि सीमित और चुने हुए फंड्स के जरिए बेहतर नियंत्रण और संतुलन बनाना ज्यादा आसान होता है। इससे निवेश की दिशा स्पष्ट रहती है और अनावश्यक जटिलता से बचाव होता है।

अलग नाम, लेकिन निवेश वही

जब आप कई फंड्स में निवेश करते हैं, तो एक बड़ी समस्या होती है—पोर्टफोलियो ओवरलैप। मान लीजिए आपने दो या तीन लार्ज-कैप फंड्स ले रखे हैं। इनमें से हर फंड में रिलायंस, इन्फोसिस या एचडीएफसी बैंक जैसे बड़े शेयर टॉप होल्डिंग में हो सकते हैं। इसका मतलब है कि आप अलग-अलग फंड्स के जरिए एक ही कंपनियों में बार-बार निवेश कर रहे हैं।

इससे दो नुकसान होते हैं

जोखिम कम होने की बजाय बढ़ सकता है, क्योंकि बाजार गिरने पर सभी फंड्स एक साथ प्रभावित होते हैं। आप हर फंड का अलग-अलग एक्सपेंस रेशियो (खर्च) भी देते हैं, जिससे कुल रिटर्न घटता है। इस तरह, ज्यादा फंड्स रखने से निवेश में विविधता का भ्रम तो बनता है, लेकिन असल फायदा नहीं मिलता।

छोटी एसआईपी से कंपाउंडिंग कमजोर

यदि 25,000 की मासिक एसआईपी को आप 8 या 10 फंड्स में बांटते हैं, तो हर फंड में बहुत कम राशि जाती है। उदाहरण के तौर पर 8 फंड्स में निवेश करने पर हर फंड में सिर्फ 3,125 ही जाएंगे। इतनी छोटी राशि में कंपाउंडिंग का प्रभाव कमजोर पड़ जाता है। लंबे समय में बड़ा कॉर्पस बनाने के लिए जरूरी है कि हर फंड में पर्याप्त निवेश हो, ताकि उसका ग्रोथ प्रभावी तरीके से दिखाई दे। अगर यही 25,000 रुपये आप 3 या 4 फंड्स में लगाते हैं, तो हर फंड में 6,000 से 8,000 रुपये तक का निवेश होगा, जिससे रिटर्न बेहतर तरीके से बढ़ सकता है।

ट्रैकिंग और मैनेजमेंट बन जाता है मुश्किल

ज्यादा फंड्स का एक और बड़ा नुकसान है—उन्हें ट्रैक करना कठिन हो जाता है। हर फंड का प्रदर्शन अलग होता है। कुछ अच्छा रिटर्न देते हैं, तो कुछ कमजोर प्रदर्शन करते हैं। अगर आपके पास बहुत ज्यादा फंड्स हैं, तो यह समझना मुश्किल हो जाता है कि कौन सा फंड अच्छा कर रहा है और किसे बदलने की जरूरत है। इसके अलावा, कमजोर फंड्स आपके पूरे पोर्टफोलियो के रिटर्न को नीचे खींच लेते हैं। इसे "डाइल्यूशन" कहा जाता है। यानी अच्छे फंड्स का फायदा भी पूरी तरह नहीं मिल पाता।

आदर्श पोर्टफोलियो कैसा हो

विशेषज्ञों के अनुसार 25,000 रुपये की एसआईपी के लिए 3 से 5 फंड्स का पोर्टफोलियो पर्याप्त होता है। इससे निवेश में संतुलन बना रहता है और जोखिम भी नियंत्रित रहता है। एक संतुलित पोर्टफोलियो के लिए आप इन कैटेगरी पर विचार कर सकते हैं।

- लार्ज-कैप या इंडेक्स फंड
  स्थिरता के लिए
- लार्ज एंड मिड-कैप फंड
  ग्रोथ और स्थिरता का मिश्रण
- मल्टी-कैप या फ्लेक्सी-कैप फंड
  अलग-अलग मार्केट कैप में निवेश
- एग्रेसिव हाइब्रिड फंड
  इक्विटी और डेट का संतुलन
- ईएलएसएस फंड (टैक्स सेविंग)
  टैक्स बचत के साथ निवेश
- हर निवेशक अपनी जोखिम क्षमता, लक्ष्य और समय अवधि के अनुसार इन कैटेगरी में 3–5 फंड्स चुन सकता है।

कैसे सुधारें अपना मौजूदा पोर्टफोलियो

अगर आपके पोर्टफोलियो में पहले से ही बहुत ज्यादा फंड्स हैं, तो घबराने की जरूरत नहीं है। आप इसे धीरे-धीरे सुधार सकते हैं। सबसे पहले, ओवरलैप चेक करें। इसके लिए कई ऑनलाइन टूल्स उपलब्ध हैं, जो बताते हैं कि आपके फंड्स में कितनी समानता है। इसके बाद उन फंड्स को पहचानें जो लगातार 2–3 साल से अपने बेंचमार्क से कमजोर प्रदर्शन कर रहे हैं। ऐसे फंड्स को धीरे-धीरे बाहर निकालें। ध्यान रखें कि एक ही कैटेगरी के कई फंड्स रखने से बचें। हर कैटेगरी से एक अच्छा और भरोसेमंद फंड चुनना बेहतर होता है। साथ ही, पोर्टफोलियो में बदलाव एकदम से न करें, बल्कि चरणबद्ध तरीके से करें ताकि बाजार के उतार-चढ़ाव का असर कम पड़े।

विविधता का सही मतलब समझें

असली विविधता का मतलब यह नहीं है कि आप ज्यादा से ज्यादा फंड्स खरीद लें। बल्कि इसका मतलब है कि आप अलग-अलग एसेट क्लास और कैटेगरी में निवेश करें। अगर आपने अलग-अलग कैटेगरी के 3–5 फंड्स चुने हैं, तो यह पर्याप्त विविधता देता है। इसके विपरीत, एक ही कैटेगरी के 8–10 फंड्स रखना सिर्फ जटिलता बढ़ाता है। इसलिए निवेश करते समय "कम लेकिन बेहतर" की रणनीति अपनाना ज्यादा समझदारी भरा कदम है।

यह रखें ध्यान

म्यूचुअल फंड निवेश में संख्या नहीं, गुणवत्ता मायने रखती है। ज्यादा फंड्स रखने से पोर्टफोलियो मजबूत नहीं होता, बल्कि उलझन बढ़ती है और रिटर्न पर असर पड़ता है। 25,000 रुपये की एसआईपी के लिए 3 से 5 अच्छी तरह चुने गए फंड्स ही पर्याप्त हैं। इससे न केवल कंपाउंडिंग का फायदा बेहतर मिलता है, बल्कि निवेश को समझना और मैनेज करना भी आसान रहता है। अंततः, सफल निवेश वही है जो सरल, संतुलित और आपके लक्ष्यों के अनुरूप हो।

खबर संक्षेप

बैठक में बनाई आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा

तोशाम। संगठन की मजबूती और कार्यकर्ताओं से निरंतर संवाद बनाए रखने के उद्देश्य से शनिवार को कैरू मंडल के सभी 14 शक्ति केंद्रों पर हर माह होने वाली नियमित बैठकों का आयोजन किया गया। इन बैठकों में सांगठनिक गतिविधियों और आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा पर विस्तार से चर्चा हुई। इन बैठकों में मुख्य वक्ता के रूप में प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य संदीप श्योराण, मंडल प्रभारी रविंद्र बापोड़ा और रमेश लालावास जिला आई टी सहप्रमुख अक्षय सारसर उपस्थित रहे।

नेहरा ने जन्मदिन पर लगाए पौधे

लोहारू। गांव झुप्पाकलां निवासी लोहारू कोर्ट के अधिवक्ता कर्णसिंह नेहरा ने अपने जन्मदिन पर गांव में पौधरोपण कर लोगों को पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया है। झुप्पाकलां गांव की ग्रीन बेल्ट में उन्होंने अपने परिवार के सदस्यों के साथ बड़, पीपल और नीम की त्रिवेणी सहित अनेक छायादार और फलदार पौधे रोपित किए।

गोशाला में मनाया विश्व पशु चिकित्सा दिवस

भिवानी। महम रोड गोशाला प्रांगण में शनिवार को विश्व पशु चिकित्सा दिवस पर विशेष ऊर्जा से सराबोर रहा, जहां पशुपालन विभाग और स्थानीय चिकित्सालय के तत्वावधान में पशुओं के स्वास्थ्य और मानव जीवन में उनके महत्व को रेखांकित करने के लिए भव्य जागरूकता सेमिनार का आयोजन किया। प्रत्येक वर्ष अप्रैल माह के अंतिम शनिवार को मनाया जाने वाला दिवस 25 अप्रैल शनिवार को पशु चिकित्सक : भोजन और स्वास्थ्य के संरक्षक विषय थीम के साथ मनाया।

बीके स्कूल में सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन

बवानीखेड़ा। बी. के. वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बवानी खेड़ा में कक्षा नर्सरी से कक्षा यू.के.जी. तक हस्त चिन्ह गतिविधि तथा कक्षा तीसरी से कक्षा पांचवी तक अंग्रेजी सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़कर भाग लेकर अपनी कला का बेहतर प्रदर्शन किया। सुलेख प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में लेखन संबंधी आदतों में सुधार करना है। सुंदर लिखावट बच्चों के लेखन की रचना और विषय वस्तु के उच्च स्तरीय पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाती है।

मेहंदी लगाई मैंने बाबा के नाम की

भिवानी। श्रीश्याम गुणगान मंडल भिवानी समिति के तत्वावधान में दादरी गेट स्थित बैंकेट हॉल में श्रीश्याम बाबा श्याम की मेहंदी की रात कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गणेश पूजन ओमप्रकाश महता ने किया और अमित गोयल ने ज्योत प्रज्वलित की। इस अवसर पर ओमप्रकाश महता ने मेहंदी की रात श्याम की परंपरा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मेहंदी के माध्यम से भक्तों द्वारा श्याम बाबा के प्रति अपना प्रेम और समर्पण व्यक्त करने का एक तरीका है। उन्होंने बताया कि ये कोई प्राचीन ऐतिहासिक परंपरा नहीं है, बल्कि पिछले कुछ वर्षों से खाटूधाम में प्रचलित हुई है।

पीओ ने सभी मुद्दों को सुलझाने का आश्वासन दिया

केंद्र का किराया आंगनबाड़ी वर्कर्स के खाते में डाला जाए

आंगनबाड़ी हेल्पर्स और वर्कर्स यूनियन ने जिला कार्यक्रम अधिकारी से की मुलाकात

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

आंगनबाड़ी हेल्पर्स और वर्कर्स यूनियन रजि. 1442 के आह्वान पर शनिवार को प्रदर्शन किया जाना था, लेकिन कार्यक्रम अधिकारी द्वारा करके अपने मुद्दों को बातचीत से हल करने का निर्णय लिया गया। इसलिए जिला कमेटी अपनी मांगों को लेकर जिला कार्यक्रम अधिकारी से बातचीत की।

भिवानी जिले की प्रधान राजबाला निनान, सचिव राजबाला शर्मा कोषाध्यक्ष प्रिया शर्मा, उपप्रधान सुनीता चहल सुमन, उर्मिला, ब्लॉक प्रधान रीटा, सुनीता, रमन, कैरू ब्लॉक से सुरेश देवी आदि जिला कमेटी शामिल हुई। वार्ता बहुत लंबे समय तक चली, जिसमें वर्कर्स द्वारा बताई गई हर एक समस्या को सुना गया और उसका समाधान करने का आश्वासन दिया गया। गुजरात हाई कोर्ट फैसले की ग्रैजुएटी के ऊपर पीओ ने कहा कि इस पर कारवाही की जा रही है, फाइल फाइनेंस डिपार्टमेंट में है। टर्मिनेट हेल्परों का भी मानदेय देने के लिए विभाग से निर्देश मांगे गए हैं। 7 महीना से केंद्र की सैलरी का बजट आ गया है ,जो जल्द ही सभी वर्करो के अकाउंट में डाल दिया जाएगा और ईंधन के, वर्दी के पैसे आदि के मुद्दों पर भी चर्चा हुई। मोबाइल डाटा का रिचार्ज की राशि को 2 हजार की बजाय 3600 रुपए, एडिशनल काम करने वाली वर्कर को 6 हजार और केंद्र का किराया मकान मालिकों की बजाय आंगनवाड़ी वर्कर के खाते में डालने के बारे में बातचीत हुई।

भिवानी। अधिकारी के साथ बातचीत करते आंगनबाड़ी वर्कर। फोटो : हरिभूमि

मई के पहले हफ्ते में होगा प्रमोशन

पीओ ने सभी मुद्दों को अपने लेवल पर सुलझाने का आश्वासन दिया है। केंद्रो में बनाए जाने वाले राशन और उसकी गुणवत्ता के बारे में भी बोला गया। हेल्पर की प्रमोशन के बारे में भी बातचीत की और बोला मई के पहले हफ्ते में प्रमोशन हो जाएगा। जिला कार्यक्रम अधिकारी ने सभी वर्करो की अन्य समस्याओं को भी सुना और उनका समाधान किया।

अतीत की यादों को फिर किया ताजा

■ महिलाओं को निम्न स्तर पर दिखाने वाली मानसिकता का करना होगा सामूहिक विरोध : डॉ. रेणु भाटिया

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

हम 70 बैच आल्यां नै तो खास खुशी हुई सै। सोचा ना था के फेर इस तरह सब एकठ्ठा होवांगी। आज की छोरियां नै देख के गर्व भी होया कि कितना आगे बढ़ री सै सारी। म्हारा कॉलेज आज भी उतना ही कमाल कर रह्या है जितना 50-55 साल पहले। ये कहना था आज आदर्श महिला महाविद्यालय में इक्कट्ठी हुई पूर्व छात्राओं का। वहीं अन्य बैच की छात्राओं ने भी ठेठ हरियाणी लहजे में कहा अरें भाई, मजा आ गया आज तो! इतने सालां बाद अपनी सहेल्यां नै देख के दिल खुश हो गया। ज्ञात रहे कि सखी संगम एलुमनी एसोसिएशन के भव्य आयोजन में जहां एक ओर नई पीढ़ी की पूर्व छात्राओं का उत्साह देखने को मिला, वहीं दूसरी ओर 70 के दशक तक की पूर्व छात्राओं की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष बना दिया। प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल के संयोजन में आयोजित हुए भव्य आयोजन के प्रथम सत्र के उद्घाटन समारोह में हरियाणा महिला आयोग की अध्यक्ष डॉ. रेणु भाटिया एवं पुलिस कमिश्नर झज्जर डॉ. राजश्री सिंह एवं हरियाणा लोक सेवा आयोग की सदस्या ज्योति बैंदा बतौर मुख्यातिथि उपस्थित रही।

पौधरोपण से पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

तोशाम। आज के दिन प्रकृति में जो भी विकार आए हैं उनके लिए केवल मनुष्य जिम्मेदार है। इसलिए प्रकृति को संतुलित करने का कर्तव्य भी मनुष्य का है। उक्त शब्द जल घर हसान परपौधारोपण कर सोमबीर महला ने कहे। सोमबीर महला पिछले तीन वर्षों से अपने पिता स्व. रामस्वरूप की याद में हर वर्ष जल घर पर पौधारोपण करते हैं। उन्होंने कहा कि उनका उद्देश्य केवल पौधे लगाना नहीं है, बल्कि उनके संरक्षण, देखभाल और पर्यावरण का संतुलन बनाए रखना भी है। पौधरोपण मिशन, पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता बचाने और जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए महत्वपूर्ण कदम हैं।

विशेष दिन को यादगार बनाने के लिए पौधरोपण

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

एमसी कॉलोनी पार्क में एक प्रेरणादायक पहल के तहत पतंजलि एवं भारत स्वाभिमान ट्रस्ट के प्रधान आत्म प्रकाश टुटेजा की पोती तनिष्का का दूसरा जन्मदिन अनोखे अंदाज में मनाया गया। इस खास अवसर को यादगार बनाने के लिए परिवारजनों व समाजसेवियों ने मिलकर पौधारोपण किया और पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न छायादार एवं फलदार पौधे लगाए गए। उपस्थित लोगों ने कहा कि आज के समय में जहां पर्यावरण प्रदूषण लगातार बढ़ रहा है, वहीं ऐसे छोटे-छोटे प्रयास समाज में बड़ा बदलाव ला सकते हैं। जन्मदिन जैसे खास अवसरों पर पौधे लगाना न केवल उस दिन को यादगार बनाता है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ और हराभरा वातावरण भी सुनिश्चित करता है।

योजनाओं का प्रचार करें: रमेश

■ बापोड़ा मंडल के 12 शक्ति केंद्र व 58 बूथों पर बैठकें हुई आयोजित

हरिभूमि न्यूज ⏭तोशाम

बापोड़ा मंडल अध्यक्ष जगत कौशिक द्वारा भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन के आदेश अनुसार बापोड़ा मंडल के सभी 12 शक्ति केंद्र के 19 गांवों के 58 बूथों पर बैठके आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष जगत कौशिक ने की। इस दौरान मुख्य वक्ता के रूप में जिला महामंत्री रमेश पचेरवाल और जिला उपाध्यक्ष और मंडल प्रभारी प्रदीप प्रजापति उपस्थित रहे। इस मौके पर जगत कौशिक ने कहा कि इन बैठकों का आयोजन संगठन को मजबूत बनाने और सरकार की जनहितैषी नीतियों को आमजन तक पहुंचाने के लिए किया गया है। बैठक में कार्यकर्ताओं को बूथ स्तर तक सक्रिय करने और नियमित संवाद बनाए रखने पर विशेष जोर दिया गया है। इस मौके पर मुख्य वक्ता पहुंचे जिला महामंत्री रमेश पचेरवाल ने कहा कि प्रत्येक बूथ पर प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम को सुनना सुनिश्चित किया जाए, ताकि कार्यकर्ता और आमजन को सरकार की योजनाओं का पता चल सकें।

तोशाम। बापोड़ा में आयोजित बैठक में उपस्थित लोग। फोटो : हरिभूमि

खास जरूरत पड़ने पर बाहर निकलें

■ बढ़ती गर्मी को लेकर रहें सावधान, चिकित्सकों ने बताए बचाव के उपाय

हरिभूमि न्यूज ⏭बवानीखेड़ा

बवानीखेड़ा क्षेत्र में लगातार बढ़ते तापमान और तेज धूप को देखते हुए स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने आमजन को सतर्क रहने की सलाह दी है। चिकित्सकों का कहना है कि लापरवाही बरतने पर हीट स्ट्रोक, डिहाइड्रेशन और अन्य बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है। इसलिए जितना हो सके घर में ही महफूज रहें और खास जरूरत पड़ने पर बाहर निकलें। इस बारे चिकित्सकों ने अपनी-अपनी राय दी।

सूती कपड़े पहनें

डॉण. अनीता अरोड़ा ने महिलाओं और बच्चों को दोपहर 12 बजे से 4 बजे तक घर से बाहर कम निकलने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि हल्के रंग के सूती कपड़े पहनें और ताजे फल व तरल पदार्थों का सेवन करें। वहीं उन्होंने बताया कि यदि शरीर में ज्यादा हरकत, कमजोरी महसूस होती है तो चिकित्सकों की राय लेकर उपचार करवाएं।

हल्के में न लें

डॉण. बिशम्बर चानना ने कहा कि यदि किसी व्यक्ति को चक्कर आना, उल्टी, सिरदर्द या तेज बुखार जैसी शिकायत हो तो तुरंत चिकित्सक से संपर्क करें। उन्होंने कहा कि गर्मी को हल्के में लेना खतरनाक साबित हो सकता है। इसलिए गर्मी शरीर के लिए खतरनाक साबित हो उससे पहले अपना उपचार करवाना सुनिश्चित करना चाहिए।

खूब पानी पिएं

डॉ. बूटा राम धमीजा ने कहा कि गर्मी के मौसम में अधिक से अधिक पानी पीना चाहिए और खाली पेट धूप में निकलने से बचना चाहिए। उन्होंने बताया कि बुजुर्गों और बच्चों का विशेष ध्यान रखना जरूरी है। क्योंकि बुजुर्ग व बच्चे गर्मी की चपेट में ज्यादा आते हैं। इसलिए उन्होंने घर में ही महफूज रहने के टिप्स दिए।

गर्मी में सावधानी रखना जरूरी : सुनील

डॉ सुनील टुटेजा ने कहा कि बाजारों और सार्वजनिक स्थानों पर काम करने वाले लोग सिर ढककर रखें तथा समय-समय पर आराम करें। उन्होंने कहा कि बच्चों को धूप में खेलने से बचाना चाहिए। वहीं उन्होने गर्मी में सावधानी बरतने बारे टिप्स दिए।

बाढ़ड़ा में शिक्षकों ने विधायक को सौंपा ज्ञापन

■ 2010 से पहले नियुक्त शिक्षकों को टीईटी से छूट देने की मांग

हरिभूमि न्यूज ⏭बाढ़ड़ा

हरियाणा विद्यालय अध्यापक संघ की बाढ़ड़ा खंड कार्यकारिणी ने जिला सचिव कृष्णसिंह शास्त्री एवं खंड प्रधान बिजेंद्र जांगड़ा के नेतृत्व में बाढ़ड़ा विधायक उमेद पातुवास के आवास पर पहुंचकर शिक्षकों की विभिन्न लंबित मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा।

इस दौरान संघ के प्रतिनिधिमंडल ने शिक्षकों से जुड़े अहम मुद्दों को प्रमुखता से उठाते हुए सरकार तक उनकी आवाज पहुंचाने की अपील की। अध्यापक संघ खंड सचिव डॉ. हरपाल आर्य ने बताया कि ज्ञापन का मुख्य विषय शिक्षक पात्रता परीक्षा टीईटी से संबंधित है। उन्होंने कहा कि वर्ष 23 अगस्त 2010 से पहले नियुक्त शिक्षकों को टीईटी से पूर्णतः छूट दी जानी चाहिए। संघ का तर्क है कि उस समय नियुक्ति के दौरान टीईटी अनिवार्य नहीं था और बाद में नियमों में बदलाव के कारण पुराने शिक्षकों पर ये शर्त लागू करना न्यायसंगत नहीं है, जिससे न केवल शिक्षकों पर मानसिक दबाव बढ़ रहा है, बल्कि उनके रोजगार पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। इस अवसर पर रामपाल, बिजेंद्र शास्त्री, संघ के जिला प्रधान यशपाल आदि मौजूद रहे।

बाढ़ड़ा। विधायक उमेद पातुवास को मांगों का ज्ञापन देते हरियाणा विद्यालय अध्यापक संघ पदाधिकारी।

खतरे में पड़ सकती है नौकरी

संघ के पदाधिकारियों ने बताया कि कई ऐसे शिक्षक हैं जो वर्षों से सेवा दे रहे हैं और ग्रामीण व दूरदराज के क्षेत्रों में शिक्षा व्यवस्था को मजबूती प्रदान कर रहे हैं। इन पर टीईटी की अनिवार्यता लागू की जाती है, तो इससे बड़ी संख्या में शिक्षकों की नौकरी खतरे में पड़ सकती है, जिससे स्कूलों में शिक्षकों की कमी और अधिक बढ़ेगी तथा शिक्षा व्यवस्था प्रभावित होगी। ज्ञापन में मांग की गई कि इस विषय को संसद के आगामी सत्र में उठाया जाए और सरकार पर आवश्यक संशोधन करने के लिए दबाव बनाया जाए, ताकि 29 के अधिनियम में संशोधन कर 23 अगस्त 2010 से पहले नियुक्त शिक्षकों को स्थायी रूप से टीईटी से छूट दी जा सके। संघ ने सुझाव दिया कि इस मुद्दे को प्रधानमंत्री, शिक्षा मंत्री एवं शिक्षा संबंधी संसदीय स्थायी समिति के समक्ष प्रभावी ढंग से रखा जाए, ताकि उचित समाधान निकल सके।

फौजी ने बलियाली का किया दौरा

■ भाजपा के दावों की हवा निकाल रहे जमीनी हालात, झूठे प्रचार से जनता को बरगला रही सरकार : रामकिशन फौजी

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

पूर्व मुख्य संसदीय सचिव (सीपीएस) रामकिशन फौजी ने प्रदेश की वर्तमान भाजपा सरकार पर तीखा हमला बोला है। गांव बलियाली में ग्रामीणों के बीच पहुंचे फौजी ने कहा कि प्रदेश की जनता आज मूलभूत सुविधाओं के लिए तरस रही है, जबकि सरकार केवल विज्ञापनों और झूठे प्रचार के सहारे अपनी छवि चमकाने में जुटी है। रामकिशन फौजी अपने जनसंपर्क अभियान के तहत गांव बलियाली पहुंचे थे। यहां उन्होंने विभिन्न परिवारों के बीच पहुंचकर उनके सुख-दुख साझा किए। इस दौरान ग्रामीणों ने उनके सामने गांव की बदहाल गलियों, पीने के पानी की किल्लत और बिजली की अनियंत्रित कटौती जैसी समस्याओं का अंबार लगा दिया।

भिवानी। लोगों से बातचीत करते पूर्व सीपीएस रामकिशन फौजी। फोटो : हरिभूमि

उठान की समुचित व्यवस्था नहीं

किसानों की समस्याओं को प्रमुखता से उठाते हुए पूर्व सीपीएस ने कहा कि आज अनाज मंडियों में किसान अपनी फसल लेकर पहुंच रहा है, लेकिन वहां ना तो समय पर खरीद हो रही है और न ही उठान की समुचित व्यवस्था है। अन्नदाता भारी परेशानियों का सामना कर रहा है, जबकि सरकार किसान हितैषी होने का ढोंग कर रही है। भाजपा सरकार की कार्यशैली पर सवाल उठाते हुए पूर्व सीपीएस रामकिशन फौजी ने कहा कि विकास केवल कागजों और होर्डिंग्स तक सीमित रह गया है। उन्होंने कहा कि गांवों में शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे की स्थिति लगातार बिगड़ रही है। सरकार करोड़ों रुपये जनता को बरगलाने और झूठे विज्ञापनों पर खर्च कर रही है, जिसका धरातल पर कोई अस्तित्व नहीं है।

मलेरिया से बचाव के उपाय बताए

■ स्वास्थ्य विभाग ने मलेरिया के प्रति चलाया जागरूकता अभियान

हरिभूमि न्यूज ⏭बाढ़ड़ा

स्वास्थ्य विभाग ने 25 अप्रैल विश्व मलेरिया दिवस के उपलक्ष्य में चांदवास के प्राथमिक विद्यालय में विशेष जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। स्वास्थ्य कार्यकर्ता संदीप श्योराण ने बताया कि कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य नन्हे छात्रों को मलेरिया जैसी गंभीर बीमारी के प्रति संवेदनशील बनाना और उन्हें इससे बचाव के उपायों के बारे में शिक्षित करना था। बच्चों को दी गई स्वास्थ्य सुरक्षा की जानकारी कार्यक्रम के दौरान उपस्वास्थ्य केंद्र से पधारे स्वास्थ्य विभाग की टीम ने बच्चों को मलेरिया फैलने के कारणों की विस्तार से जानकारी दी।

बाढ़ड़ा। चांदवास में विद्यार्थियों को मलेरिया को लेकर सजग करते व पानी की टंकियों को साफ करते स्वास्थ्यकर्मी संदीप श्योराण। फोटो : हरिभूमि

अपने आसपास सफाई रखें

स्वास्थ्यकर्मियों ने बच्चों को बताया कि मलेरिया मादा एनाफिलीज मच्छर के काटने से फैलता है। उन्होंने छात्रों को अपने आसपास साफ-सफाई रखने, पानी जमा न होने देने और मच्छरों से बचने के लिए मच्छरदानी का उपयोग करने जैसे महत्वपूर्ण सुझाव दिए। साथ ही मलेरिया के प्रमुख लक्षणों जैसे तेज बुखार, कंपकंपी और सिरदर्द के बारे में भी सतर्क रहने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का संचालन स्कूल के मुख्य अध्यापक जोगेंद्र और अध्यापक विजेंद्र की देखरेख में हुआ। मुख्य अध्यापक ने कहा कि बच्चों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाना समय की मांग है। उन्होंने आमजन से अनुरोध किया कि अपने स्तर पर किसी भी प्रकार की कोई दवाई न लें जैसे ही बुखार होने पर आपके खून की जांच करवाएं और डॉक्टर से सलाह लें।

देश के 12.5 करोड़ से अधिक वनवासी बंधुओं के जीवन में आ रहा सकारात्मक परिवर्तन: सत्येंद्र

छात्राओं ने असम, नागालैंड, त्रिपुरा और हरियाणवी लोकनृत्य की दी मनमोहक प्रस्तुतियां

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

वनवासी कल्याण आश्रम हरियाणा (भिवानी) द्वारा हलवासिया विद्या विहार में स्वागत समारोह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का गरिमामयी आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ भारत माता एवं बाबा साहेब देशपांडे के चित्र के समक्ष द्वीप प्रज्वलन के साथ हुआ। कार्यक्रम में वीके शारदा व बृजलाल सर्राफ ने बतौर अतिथि कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय अध्यक्ष सत्येंद्र सिंह ने अपने उद्बोधन में वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रव्यापी सेवा कार्यों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया। उन्होंने बताया कि वर्ष 1952 से प्रारंभ हुई सेवा यात्रा के माध्यम से आज 12.5 करोड़ से अधिक वनवासी बंधुओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्राम विकास, स्वावलंबन एवं संस्कार जागरण के माध्यम से देशभर में 23,000 से अधिक सेवा प्रकल्प संचालित हैं। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण पूर्वोत्तर राज्यों से आई छात्राओं द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम रहा, जिसमें असम का बिहू नृत्य, नागालैंड एवं त्रिपुरा की लोक संस्कृति तथा हरियाणवी लोकनृत्य एवं योग-मार्शल आर्ट के मनमोहक प्रदर्शन रहे।

आर्थिक सहयोग के कार्य किए जा रहे

वहीं वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा हरियाणा में भिवानी एवं फरीदाबाद में छात्रावास संचालित किए जा रहे हैं, जहां पूर्वोत्तर राज्यों एवं जम्मू-कश्मीर से आए विद्यार्थी शिक्षा के साथ-साथ भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों का भी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। देश के वनवासी क्षेत्रों में आर्थिक सहयोग एवं वस्त्र वितरण जैसे सेवा कार्य भी निरंतर संचालित किए जा रहे हैं। कार्यक्रम में दिल्ली से पहुंचे जगदीश बागड़िया, नरेंद्र व सुनिता सिंघानिया की गरिमामयी उपस्थिति रही। विशेष रूप से भूपेंद्र धर्माणी, निर्लेप माहेश्वरी, मनोज दीवान, अतुल महराण, राकेश मित्तल विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे।

न्यूज डायरी

आरईडी स्कूल चरखी में विद्यार्थी परिषद् शपथ ग्रहण व छात्रवृत्ति वितरण समारोह का आयोजन

चरखी दादरी। आरईडी स्कूल चरखी शाखा में स्टूडेंट काउंसिल शपथ ग्रहण एवं छात्रवृत्ति वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शिक्षाविद् एवं संस्थान के निदेशक जितेंद्र सिंह अहलावत, सह-निदेशक शैलेंद्र सिंह अहलावत तथा प्रबंधन समिति के सदस्य बिजेन्द्र सिंह अहलावत उपस्थित रहे। समारोह का उद्देश्य छात्रों में नेतृत्व क्षमता विकसित करना और उत्कृष्ट विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देकर प्रोत्साहित करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ विदिशा, योगिता, वंशिका व आरवी द्वारा सरस्वती वंदना से हुआ। स्वागत भाषण श्रीमती किशु फौगाट ने दिया, जिसमें उन्होंने विद्यार्थी परिषद की महत्ता बताई।

नन्हे-मुन्ने बच्चों ने पेड़-पौधों, फल और हरी सब्जियों का बताया महत्व

भिवानी। लिटिल हार्टस ग्रुप ऑफ स्कूलस के विद्यालयों में शनिवार को प्री-प्राइमरी विभाग के नन्हे-मुन्हे बच्चों द्वारा पुरे उत्साह के साथ ग्रीन-डे सैलीब्रेट किया। स्कूल के महासचिव संजय गोयल, एमडी पवन गोयल व भावना गोयल ने बताया कि लिटिल हार्टस ग्रुप के विद्यालयों के प्री-प्राइमरी विभाग के बच्चों ने अनेक गतिविधियों में भाग लेते हुए अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। बच्चे हरे रंग की आकर्षक वेशभूषाओं व अपने लंच में भी हरी सब्जियां, फल व पकवान लेकर आए हुए थे, जिससे उन्हें हमारे जीवन में हरी सब्जियों का महत्व पता चल सके । विद्यालय की निदेशिका ऐश्वर्या सिंघल, निदेशक रामानन्द सिंघल, राहुल गोयल, निश्चल गोयल, मेघा जैन, साक्षी गोयल व प्रियांश गोयल ने उनकी प्रशंसा की।

युवा पीढ़ी शिक्षा के साथ-साथ जिम्मेदारियों को भी समझे : चेयरमैन

चरखी दादरी। पंचायती राज दिवस के उपलक्ष्य में बीआर शिक्षण संस्थान द्वारा एक प्रेरणादायक एवं जागरूकता से भरपूर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम विद्यालय की प्रार्थना सभा के दौरान किया गया । इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को लोकतंत्र की जड़ों और ग्राम स्तर पर शासन की महत्वपूर्ण भूमिका से परिचित कराना रहा। कार्यक्रम में विद्यार्थियों के साथ साथ विद्यालय की भूगोल प्रवक्ता ने भाषण के माध्यम से पंचायती राज व्यवस्था की विशेषताओं, उसके ऐतिहासिक महत्व तथा ग्रामीण विकास में उसकी अहम भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला। विद्यार्थियों को बताया कि पंचायती राज केवल एक प्रशासनिक व्यवस्था नहीं, बल्कि जनभागीदारी का सशक्त माध्यम है, जो देश के समग्र विकास की आधारशिला है। संस्थान के चेयरमैन कृष्ण भारद्वाज ने अपने संबोधन में कहा कि "पंचायती राज व्यवस्था हमारे लोकतंत्र की नींव है। जब गांव सशक्त होंगे, तभी देश सशक्त बनेगा। युवा पीढ़ी को चाहिए कि वे शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक जिम्मेदारियों को भी समझें और अपने क्षेत्र के विकास में सक्रिय भागीदारी निभाएं।

आनंद स्कूल में कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन

बवानीखेड़ा। आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस में विद्यार्थियों की साहित्यिक प्रतिभा को निखारने के उद्देश्य से हिंदी एवं अंग्रेजी कविता पाठ प्रतियोगिता करवाई गई। प्रतियोगिता प्रिंसिपल नीतीश मिश्र एवं वाइस प्रिंसिपल गीता यादव की देखरेख में संपन्न हुई। कार्यक्रम का संचालन अंग्रेजी अध्यापिका मुस्कान और हिंदी अध्यापिका ममता ने किया। इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों पर कविताएं प्रस्तुत करते हुए अपनी भाषा दक्षता, उच्चारण एवं अभिव्यक्ति कौशल का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। प्रिंसिपल नीतीश मिश्र ने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं समय-समय पर आयोजित की जाती हैं, जिससे विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि होती है। उन्होंने बच्चों को ऐसे कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया ताक वे अपनी प्रतिभा को निखार सकें।

मॉडल संस्कृति विद्यालय में बालिका मंच का आयोजन, छात्राओं को किया प्रेरित

बवानीखेड़ा। बवानीखेड़ा के राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में शनिवार को बालिका मंच कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं को आत्मनिर्भर, जागरूक और आत्मविश्वासी बनाना रहा। इस अवसर पर विद्यालय की प्राचार्या संतोष भाकर, शिक्षिका सोनू तथा गीता, गोल्डी आदि ने छात्राओं को जीवन में शिक्षा के महत्व, आत्मसम्मान और आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना के साथ हुई, जिसके बाद छात्राओं ने विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। बालिका मंच के माध्यम से छात्राओं को सामाजिक चुनौतियों का सामना करने, अपने अधिकारों को जानने तथा शिक्षा के जरिए सफलता प्राप्त करने के बारे में विस्तार से बताया गया। प्राचार्या संतोष भाकर ने कहा कि आज की बालिकाएं हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही हैं। जरूरत है कि वे अपने अंदर छिपी क्षमता को पहचानें और बड़े सपने देखने के साथ उन्हें पूरा करने का संकल्प लें।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8814999151, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

पांच गोशालाओं को दी 36 लाख रुपये की सहायता

खुले दरबार में विधायक ने सुनीं जन समस्याएं

विधायक ने क्षेत्र की सड़क, पेयजल, बिजली एवं मूलभूत सुविधाओं से जुड़ी समस्याएं उठाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

भिवानी। गौशाला संचालकों को सहायता राशि के चेक भेंट करते विधायक सुनील सांगवान। *फोटो : हरिभूमि*

दादरी के विधायक सुनील सांगवान ने सामाजिक सरोकार एवं जनसेवा का उदाहरण पेश कर पांच गोशालाओं को 36 लाख 17 हजार 440 रुपये की आर्थिक सहायता के चेक वितरित किए। यह सहायता हरियाणा गोसेवा आयोग के माध्यम से प्रदान की गई, जिससे क्षेत्र की गोशालाओं को बड़ी राहत मिली है। विधायक सुनील सांगवान ने शनिवार को कैंप कार्यालय में खुला दरबार लगाकर आमजन की समस्याएं भी सुनीं।

खुले दरबार के दौरान क्षेत्र के लोगों ने सड़क, पेयजल, बिजली और अन्य मूलभूत सुविधाओं से जुड़ी अनेक समस्याएं उनके सामने रखीं और समस्याओं का जल्द से जल्द समाधान करवाने का आग्रह किया। इस पर विधायक सांगवान ने मौके पर मौजूद अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश देते हुए कहा कि जन समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर समाधान सुनिश्चित किया जाए और किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। वहीं उन्होंने गांव छपार, रामपुरा, अटेला सहित दादरी की अन्य गोशालाओं के प्रतिनिधियों को हरियाणा गौ सेवा आयोग के माध्यम से चेक सौंपे। विधायक सांगवान ने कहा कि प्रदेश सरकार गोवंश संरक्षण एवं गोशालाओं के विकास के लिए लगातार प्रयासरत है। उन्होंने कहा कि गोशालाएं समाज की आस्था का केंद्र हैं और इनके संचालन में किसी प्रकार की कमी नहीं आने दी जाएगी। वहीं विधायक सांगवान ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि विकास कार्यों में तेजी लाई जाए और लोगों को सरकारी योजनाओं का पूरा लाभ मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि जनता की समस्याओं का समाधान उनकी प्राथमिकता है और वे नियमित रूप से खुला दरबार लगाकर लोगों की समस्याएं सुनते रहेंगे।

हिंदू धर्म में गाय को माता का दर्जा: विधायक सांगवान

विधायक सुनील सांगवान ने लोगों से आह्वान किया कि हिंदू धर्म में गाय को माता का दर्जा दिया जाता हैं, ऐसे में हम सबका कर्तव्य हैं कि गाय व गोवंश की सेवा के लिए आगे आए और उसका सम्मान करें, ताकि गोवंश भूख प्यासा रहकर मौत का शिकार न हो। कई बार देखने में आता है कि पशुपालक गाय का दूध निकालकर उसे बेसहारा छोड़ देते हैं और वह भूखी प्यासी पॉलीथिन आदि में मुंह मारती दिखाई देती हैं, जो बहुत ही गलत हैं। हम सबको गाय माता की सेवा एवं रक्षा करनी चाहिए।

भिवानी। आयोजित कार्यक्रम में सबोधित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

एथिकल एआई पर अंतरराष्ट्रीय मंथन

■ टीआईटीएस में "एथिकल इंटेलिजेंस 2026" अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन संपन्न

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

वस्त्र विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (टीआईटीएस), भिवानी में "एथिकल इंटेलिजेंस 2026: सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के माध्यम से एल्गोरिदमिक पक्षपात का समाधान" विषय पर प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन हाइब्रिड मोड (ऑनलाइन एवं ऑफलाइन) में किया गया। यह सम्मेलन न केवल शैक्षणिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा, बल्कि वैश्विक स्तर पर नैतिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में संवाद को सुदृढ़ करने का एक प्रभावी मंच भी बना।

सम्मेलन में देश-विदेश से 150 से अधिक शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं एवं विशेषज्ञों ने भाग लिया, जबकि 80 से अधिक उच्च-स्तरीय शोध-पत्र प्रस्तुत किए गए। प्रतिभागियों में यूक्रेन, नाइजीरिया, स्वीडन जैसे देशों के साथ-साथ भारत के विभिन्न राज्य राजस्थान, तमिलनाडु, नागालैंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, हरियाणा एवं नई दिल्ली से विद्वानों की उल्लेखनीय सहभागिता रही। इस विविधतापूर्ण उपस्थिति ने सम्मेलन को अंतरराष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया।

सम्मेलन को चार तकनीकी सत्रों में व्यवस्थित किया गया, जिनमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता की नैतिकता (अल एथिक्स), एल्गोरिद्मिक पूर्वाग्रह (एल्गोरिथमिक बॉयस), मानवीय मूल्य(ह्यूमन वैल्यूज), तथा तकनीकी उत्तरदायित्व (टेक्नोलॉजिकल रिस्पांसिबिलिटी) जैसे समसामयिक एवं महत्वपूर्ण विषयों पर गहन विचार-विमर्श हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. एम. आर. रवि (भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली) ने कहा कि आज के डिजिटल युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विस्तार तीव्र गति से हो रहा है, लेकिन इसके साथ नैतिकता का समावेश उतना ही आवश्यक है। उन्होंने कहा कि एल्गोरिद्मिक पक्षपात को समाप्त करने के लिए वैश्विक स्तर पर समान नैतिक मानकों को अपनाना होगा, जिससे तकनीक मानवता के हित में कार्य कर सके। मुख्य वक्ता डॉ. कुमार संभवा ने कहा कि यदि तकनीक में सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को समाहित किया जाए, तो एक न्यायपूर्ण एवं समावेशी समाज का निर्माण संभव है।

कविता पाठ में 12वीं की प्रिया प्रथम और इसी कक्षा के अर्णव ठाकुर द्वितीय स्थान पर रहे

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

■ आचार्या अंजुला वर्मा एवं अनुराधा ने निर्णायक की भूमिका का निर्वहन किया

हलवासिया विद्या विहार के वरिष्ठ विभाग में साहित्य सुधा संगम परिषद् के निर्देशन में कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम माँ शारदा के समक्ष दीप प्रज्वलन से कार्यक्रम की शुरुआत की गई।

कविता पाठ में छात्रों ने ज्वलंत मुद्दों, कलयुग की वेदना, देशभक्ति, नारी शक्ति प्रकृति, स्वतंत्रता सेनानी, शहीदों, क्रांतिकारियों जैसे विषयों पर शानदार काव्य पाठ किया। कार्यक्रम में 12 प्रतिभागी समिधा, यशी, अक्षिता, चिराग, गहना, प्रिया, नवदीप, नियति, अश्मि शर्मा, यशिका कौशिक, साक्षी,अर्णव ठाकुर तथा प्रमोद ने भाग लेकर एक से बढ़कर एक कविताओं का पाठ किया। आचार्या अंजुला वर्मा एवं अनुराधा ने निर्णायक की भूमिका का निर्वहन किया। निर्णायक मंडल ने विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और प्रस्तुति की सराहना की। छात्रा साक्षी एवं प्रिया द्वारा सफल मंच संचालन किया गया। प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार रहें-एकलव्य सदन से कक्षा 12वीं की छात्रा प्रिया ने प्रथम स्थान,नचिकेता सदन से कक्षा बारहवीं के छात्र अर्णव ठाकुर ने द्वितीय, अभिमन्यु सदन से कक्षा बारहवीं की छात्रा नियति ने तृतीय स्थान तथा अभिमन्यु सदन से ही कक्षा नौवीं के छात्र चिराग एवं अर्जुन सदन से छात्रा यशी ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त कर शानदार कविता पाठ किया। प्राचार्य विमलेश आर्य ने कहा कि ऐसी प्रतियोगिताएँ विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और मंच पर अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास करती हैं। विद्यालय प्रशासक डॉ शमशेर सिंह अहलावत ने विजेताओं को बधाई दी।

दिल्ली वर्ल्ड पब्लिक स्कूल, पेरेंट्स ओरिएंटेशन प्रोग्राम' का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। कार्यक्रम में बच्चों को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

दिल्ली वर्ल्ड पब्लिक स्कूल, भिवानी में प्राचार्या डॉ निर्मला नीतू की अध्यक्षता में 'पेरेंट्स ओरिएंटेशन प्रोग्राम' का आयोजन अत्यधिक हर्षोल्लास के साथ किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में विद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के सचिव व कोषाध्यक्ष वी.पी. त्रिपाठी ने भी शिरकत की। अभिभावकों का तिलक लगाकर अभिनंदन किया गया। मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन व पुष्पांजलि के पश्चात कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कथक नृत्य के माध्यम से कक्षा पांचवीं की छात्रा मिशिका और कक्षा दूसरी की छात्रा समायरा ने गणेश वंदना की मनोरम प्रस्तुति दी तत्पश्चात कक्षा पांचवीं की छात्रा काव्यांशी ने रंगारंग राजस्थानी नृत्य ' कालिया कूद पड़ा मेला म ' प्रस्तुत किया जिसने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। दवीना ,जीनल, माही, मिशिका,अवनी और काव्यांशी ने अतिथियों के स्वागत में वेलकम डांस प्रस्तुत किया। नव प्रवेश प्राप्त छात्रों - युवराज ,मुकुल ,वर्षा, हेमंत, दीपिका ,श्रेया ,दक्ष ,समर, हिमांशु और तन्वी ने 'वेलकम सॉन्ग' की मधुर प्रस्तुति देकर सभी अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर नव प्रवेश प्राप्त विद्यार्थियों के अभिभावकों को विद्यालय से संबंधित विभिन्न गतिविधियों से अवगत करवाया गया।

वॉलीबॉल प्रतियोगिता में शिवाजी सदन रहा प्रथम

बहल। बीआरसीएम ज्ञानकुंज स्कूल में अंतर-सदनीय मध्यम वर्ग की वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में शिवाजी सदन ने प्रथम स्थान हासिल किया जबकि टैगोर सदन द्वितीय स्थान पर रहा। प्राचार्य राजेश कुमार झाझडिया और उपप्राचार्या सरस्वती दीक्षित ने प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करते हुए शुभकामनाएं दी। शनिवार को आयोजित प्रतियोगिता में विद्यालय के चारों सदनों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर खेल भावना का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। रोमांचक मुकाबलों के बाद शिवाजी सदन ने शानदार प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। टैगोर सदन द्वितीय स्थान पर रहा, जबकि अशोका सदन ने तृतीय स्थान हासिल किया।

अपने आसपास सफाई रखें: बलराज फौगाट

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

चरखी दादरी। जागरूकता सेमीनार में मलेरिया के प्रति जागरूक करते स्वास्थ्य कर्मी।

बिरोहड़ स्थित एचडी पब्लिक स्कूल में विश्व मलेरिया दिवस के अवसर पर एक जागरूकता सेमीनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को मलेरिया जैसी गंभीर बीमारी के प्रति सचेत करना और बचाव के उपायों की जानकारी देना था। सेमीनार में पीएचसी बिरोहड़ की मेडिकल टीम ने भाग लिया।

जिसमें डॉ. मेजर पंकज, डॉ. सुनील, सुनील एचआई सहित अन्य स्वास्थ्य कर्मी शामिल रहे। उन्होंने विद्यार्थियों को मलेरिया के कारण, लक्षण, बचाव और आवश्यक सावधानियों के बारे में विस्तार से बताया। टीम ने बताया कि मच्छरों से बचाव, साफ-सफाई बनाए रखना और समय पर इलाज कराना बेहद जरूरी है।

इसके साथ ही टीम ने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान के महत्व पर भी प्रकाश डाला तथा एचपीवी वैक्सीन के बारे में जानकारी देते हुए इसके लाभों को समझाया। विद्यालय के निदेशक बलराज फौगाट ने कहा कि सभी विद्यार्थियों को स्वास्थ्य संबंधी दिशा-निर्देशों का पालन करना चाहिए और अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखनी चाहिए। उन्होंने विशेष रूप से गर्मी के मौसम में सावधान रहने की सलाह दी। कार्यक्रम के अंत में प्राचार्या नमिता दास ने पीएचसी टीम का विद्यालय में आकर विद्यार्थियों को महत्वपूर्ण जानकारी देने के लिए आभार व्यक्त किया।

छात्राओं ने वोटिंग करके चुना अपना कक्षा प्रतिनिधि

भिवानी। श्रीमती उत्तमीबाई आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में कक्षा प्रतिनिधि के लिए चुनाव प्रक्रिया संपन्न हुई। चुनाव का उदेश्य विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, जिम्मेदारी एवं अनुशासन का विकास करना है। मॉनिटर कक्षा और विद्यालय के बीच महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य करता है। प्रत्येक कक्षा में छात्राओं को चुनाव प्रक्रिया विधिपूर्वक समझाई। चुनाव के लिए छात्रों का उत्साह देखते हुए बनता था। कक्षा छठी से आठवीं तक मंजू रानी, नौवीं से दसवीं तक सविता और 11वीं से 12वीं तक बबीता की देखरेख में चुनाव प्रक्रिया संपन्न हुई। कक्षा छठी से किंजल, 7वीं से हिमांशी, 8वीं ए से दृष्टि, 8वीं बी से उर्वशी, नौंवी ए से निकिता, नौंवी बी से आराध्या, दसवीं एक से प्राची, दसवीं बी से वर्षा, 11वीं ए से लावण्या, 11वीं बी से विशाखा, 12वीं एक से भूमिका बंसल, 12वीं बी से जन्नत ने भारी मत लेकर चुनाव जीता। विद्यालय प्राचार्या अनीता बासोतिया ने बताया कि ऐसे कार्यक्रमों से छात्राओं में नेतृत्व की क्षमता एवं गुणों को विकसित करना है तथा छात्राओं को लोकतंत्र की वास्तविक समक्ष भी प्रदान करना है।

विश्व मलेरिया दिवस | **जिले को मलेरिया मुक्त बनाने के लिए मांगा लोगों का सहयोग**

स्कूली बच्चों ने जागरूकता रैली व पेंटिंग के माध्यम से दिया सावधानी बरतने का संदेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

भिवानी। रैली निकालकर जागरूक करते हुए। फोटो : हरिभूमि

विश्व मलेरिया दिवस पर स्वास्थ्य विभाग भिवानी द्वारा हमारा अपना फाउंडेशन एनजीओ भिवानी के सहयोग से स्थानीय एएनएम/जीएनएम गवर्नमेंट ट्रेनिंग स्कूल में शनिवार को पेंटिंग प्रतियोगिता करवाई गई, जिसमें बच्चों ने अपनी पेंटिंग के माध्यम से मलेरिया से बचाव का संदेश दिया। बच्चों ने जागरूकता रैली भी निकाली। रैली का उद्देश्य शहर वासियों को विश्व मलेरिया दिवस पर मलेरिया से बचाव के लिए जागरूक करना है।

इस दौरान सिविल सर्जन डॉ. रघुवीर शांडिल्य ने बताया कि स्वास्थ्य विभाग का लक्ष्य जिला भिवानी को वर्ष 2030 तक मलेरिया मुक्त बनाना है। उन्होंने बताया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने विश्व मलेरिया दिवस को वर्ष 2008 से व्यापक स्तर पर मनाना शुरू किया था। उन्होंने कहा कि मलेरिया को हरियाणा में जड़ से समाप्त करने के लिए राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम चलाया गया है, जिसमें जिला भिवानी को वर्ष 2030 तक मलेरिया मुक्त करने का लक्ष्य रखा गया है। यह लक्ष्य हम तभी प्राप्त कर सकते हैं जब हम सभी जिलावासी इसमें पूर्ण सहयोग करेंगें।

सिविल सर्जन डॉ. शांडिल्य ने बताया कि जिले में आज सभी सब सैन्टर, पीएचसी, सीएचसी, एसडीएच तथा जिला मुख्यालय पर विश्व मलेरिया दिवस मनाया जा रहा है । उन्होंने बताया कि जिला भिवानी के सभी सीएचसी पर 5-5 बेड तथा सिविल हॉस्पिटल भिवानी में वार्ड नंबर 9 को विशेष आइसोलेशन वार्ड बनाया गया है जिसमें 26 बैड आरक्षित किए गए हैं जिसमें जिसमें डेंगू,मलेरिया, चिकनगुनिया बुखार के मरीजों हेतु विशेष व्यवस्था की गई है । सभी बैड को मच्छरदानी युक्त किया गया है ।

नियमित रूप से सफाई करें

हमारा अपना फाउंडेशन के संस्थापक सचिन जैन ने बताया कि स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से हम आम जनता को सभी राष्ट्रीय कार्यक्रमों में जागरूकता रैली, पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता आदि के द्वारा समय-समय पर सहयोग करके जागरुक करते रहते हैं । उन्होने बच्चों को कहा कि मलेरिया से मुक्ति तभी संभव है जब प्रत्येक बच्चा इस सन्देश को प्रत्येक व्यक्ति तक पहुचांएगा तथा सप्ताह में एक दिन अपने घर की सफाई करेगें। उन्होंने कहा कि कूलर आदि की नियमित रूप से सफाई करें।

शिक्षा संस्कार चरित्र निर्माण
आर्यन कोचिंग
स्थाई एकेडमी (विश्वास का दूसरा नाम)
12वीं के बाद सरकारी नौकरी
नया बैच आरम्भ
अग्निवीर | SSC | रेलवे
हरियाणा पुलिस | हरियाणा ग्रुप-डी | CET
AIRFORCE | NAVY | ARMY
पता : बस स्टैंड के पास, चरखी दादरी
9050035973, 9812611926

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 26 अप्रैल 2026

विशेषः अंतरराष्ट्रीय नृत्य दिवस
29 अप्रैल

आवरण कथा / प्रस्तुतिः रेणु खंतवाल

नृत्य ऐसी कला है, जो जीवन को उमंगित कर देती है। जिनके जीवन में नृत्य शामिल होता है, वे हर पल संतुलित, आनंदित महसूस करते हैं। नृत्य दिवस के अवसर पर यहां अलग-अलग शैली के नर्तक और नृत्यांगनाएं बता रहे हैं नृत्य का उनके जीवन में क्या महत्व है? यानी, नृत्य ने उनके जीवन को किस-किस स्तर पर बदला, उसे अलग दिशा प्रदान की? जब नृत्य के दौरान वे उसमें पूरी तरह खो जाते हैं तो उस समय किस तरह की अनुभूति होती है? और शारीरिक-मानसिक सेहत बेहतर करने में नृत्य की भूमिका को कितना महत्वपूर्ण मानते हैं?

जीवन की सरगम पर तन-मन की थिरकन

नृत्य से जीवन में निखार आता है

कविता द्विवेदी, ओडिसी नृत्यांगना

नृत्य मेरे लिए जीवन है और मेरे जीवन में नृत्य है। मैं ऐसा महसूस करती हूं कि अगर मेरे जीवन में नृत्य नहीं होता तो मेरे जीवन का कोई अस्तित्व भी नहीं होता। नृत्य ने समय-समय पर मेरे जीवन को बदला, स्थापित किया। मुझे अलग-अलग स्तर पर पहचान दी, आगे बढ़ाया। इसी की वजह से मुझे कॉलेज में स्कॉलरशिप मिली और देश दुनिया में अपनी कला दिखाने का अवसर मिला। मैं दृढ़ विश्वास से आगे बढ़ पाई। सन 2013 में मुझे ओडिसा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार मिला। इस पुरस्कार का भी मेरे जीवन में बहुत महत्व रहा है। नृत्य के माध्यम से मैंने खुद को खोजा, समझा कि मुझमें क्या अच्छाई है, क्या कमी? जब भी मैं नृत्य करती हूं, उसमें खो जाती हूं। उसके बाद मैं नृत्य के शिखर बिंदु पर पहुंच जाती हूं। वहां तो मुझे अपनी कोई सुधबुध नहीं रहती। पूर्ण समर्पण के साथ मैं नृत्य में डूबी होती हूं। उस दौरान एक दिव्य शक्ति को महसूस करती हूं। जब मैं अपनी प्रस्तुति पूरी करती हूं, उसके बाद मुझसे कुछ बोला ही नहीं जाता, मैं चुप हो जाती हूं। कभी महसूस करती हूं कि अब मुझे एकांत चाहिए। जिस शक्ति के साथ मैं नृत्य कर रही थी, उसी शक्ति के साथ मैं कुछ वक्त बिताऊं। नृत्य से मुझे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक ऊर्जा मिलती है। हर व्यक्ति को अपनी दिनचर्या में नृत्य को शामिल करना चाहिए। नृत्य से जीवन में निखार आता है। नृत्य के माध्यम से आप समाज में अलग पहचान, महत्व बनाते हैं। बहुत त्याग और तपस्या से मैंने नृत्य के माध्यम से देश-दुनिया में एक अलग पहचान बनाई है। *

तन-मन-जीवन के लिए जरूरी है नृत्य

श्रुति सिन्हा, कथक नृत्यांगना

नृत्य मेरे जीवन का महत्वपूर्ण, बहुआयामी हिस्सा है। नृत्य ने मुझे जीने का सकारात्मक नजरिया दिया। मेरा शरीर, मन और आत्मा पूरे तरीके से नृत्य में डूबे रहते हैं। मैं नृत्य के जरिए खुद को बहुत मजबूत महसूस करती हूं। जीवन में जितने भी उतार-चढ़ाव आते हैं, उससे उबरने में नृत्य मेरी बहुत सहायता करता है। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और पेशेवर स्तर पर नृत्य का मुझ पर बहुत प्रभाव रहा। आज नृत्य के कारण ही सामाजिक स्तर पर मुझे इतना मान-सम्मान मिलता है। नृत्यांगना, नृत्य शिक्षिका और कोरियोग्राफर के रूप में मेरी पहचान है। नृत्य ने ही मुझे सकारात्मक, ऊर्जावान बनाया। आत्म खोज व अनुशासन के साथ लक्ष्य की ओर बढ़ना सिखाया। रचनात्मक नई सोच और कल्पनाशक्ति प्रदान की। इस तरह नृत्य ने मुझे जीवन में बहुत कुछ दिया है। कई बार नृत्य करते हुए मैं जब उसमें पूरी तरह खो जाती हूं, उस समय जो अनुभूति होती है उसे शब्दों में बताना मुश्किल है। उस अनुभूति को सिर्फ महसूस किया जा सकता है। उस समय मैं सिर्फ अपने आप में लीन होकर नृत्य में डूबी होती हूं। शायद इसे ही नृत्य के जरिए मनुष्यतत्व का देवतत्व तक पहुंचना कहते हैं। नृत्य बहुत अच्छा व्यायाम भी है, जिससे शरीर लचीला, मजबूत और ऊर्जावान बनता है। नृत्य आत्मविश्वास बढ़ाता है, तनाव, चिंता व अवसाद कम करता है। नृत्य, संगीत और ताल के साथ जुड़कर मन को खुशी व शांति देता है। मन को संतुलित करने के साथ-साथ पूरे व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाता है। इस तरह नृत्य शारीरिक और मानसिक सेहत दोनों के लिए बहुत लाभकारी होता है। मेरा मानना है कि नृत्य को अपने डेली रूटीन में शामिल करने से सकारात्मक सोच बढ़ती है। आलस नहीं रहता। शरीर बीमारियों से दूर रहता है। अतः हम किसी भी उम्र के हों, नृत्य जरूर करना चाहिए। *

नृत्य मेरी अभिव्यक्ति का माध्यम है

बीके अतुल गोस्वामी, कंटेंपरेरी डांसर-कोरियोग्राफर

मेरे लिए नृत्य केवल एक कला नहीं बल्कि मेरी पहचान है। नृत्य ने मेरे शरीर को शक्ति, मन को शांति और मेरी आत्मा को मुझसे जोड़ा है। जहां शब्द रुक जाते हैं, वहां से मेरा नृत्य शुरू होता है यानी नृत्य मेरी अभिव्यक्ति का माध्यम है। जब मैं नृत्य करता हूं और पीक पर पहुंच जाता हूं, उस समय मुझे यह महसूस होता है कि मैं डांस नहीं कर रहा हूं बल्कि मेरी आत्मा मेरे शरीर से डांस करवा रही है। उसके बाद हर बीट दिल की धड़कन बन जाती है और दुनिया कुछ पलों के लिए ठहर सी जाती है। डांस करते हुए मैं इस पीक को हमेशा महसूस करता हूं क्योंकि उन पलों में मैं खो जाता हूं। नृत्य केवल शरीर की ही नहीं बल्कि मन की थेरेपी भी होती है। नृत्य वो ताकत है, जो तनाव को भी ऊर्जा में बदल देता है। जैसे ही आप डांस करना शुरू करते हैं, शरीर में जितनी भी नकारात्मकता है, वह अपने आप रिलीज होने लगती है और आप बहुत हल्का महसूस करते हैं। अगर आप रूटीन में अपनी पसंद का कोई भी डांस शामिल करें तो यह आपको फ्रीडम का एहसास कराएगा। डांस के हर बीट पर आप अपने तनाव को कम करते जाते हैं। यह आपको शारीरिक रूप से तो फिट रखता ही है, साथ ही सोच व विचारों को सकारात्मक भी बनाता है। जब भी मैं तनाव महसूस करता हूं तो डांस करके खुद को हल्का और खुश महसूस करता हूं। इसलिए मैं तो यही सबसे कहता हूं कि हर इंसान को डांस जरूर करना चाहिए। *

नृत्य अध्यात्म से जोड़ता है और ईश्वर के करीब ले जाता है

ऐश्वर्य हरीश, भरतनाट्यम नृत्यांगना

मेरे लिए नृत्य केवल जीवन का हिस्सा नहीं है बल्कि मेरा जीवन ही है। मैं अपने परिवार की पांचवीं पीढ़ी से हूं, जो नृत्य कला से जुड़ी है। नृत्य मेरे खून में रचा-बसा है। बचपन से मैं देखती आ रही हूं कि यह मेरे साथ इस तरह जुड़ गया कि कभी लगा ही नहीं कि मैं कुछ अलग काम कर रही हूं। नृत्य ने मुझे अनुशासन और धैर्य सिखाया। खुद को समझना सिखाया। जैसे-जैसे मैं नृत्य करती गई यह मेरे लिए केवल नृत्य नहीं रहा बल्कि साधना बन गया। नृत्य हमें अपनी जड़ों से जोड़ता है। नृत्य अध्यात्म से जोड़ता है और ईश्वर के और करीब ले जाता है। कई बार लगता है कि जो मैं शब्दों में नहीं कह पाती, वह नृत्य अपने आप कह देता है। नृत्य में जो पीक स्टेज होती है, उसे शब्दों में कह पाना मुश्किल है। क्योंकि उस समय आप नृत्य कर नहीं रहे होते बल्कि नृत्य बन जाते हो। एक अलग ही स्थिति होती है, जहां अहंकार धीरे-धीरे मिट जाता है। उस समय न तो समय का, न दर्शकों का और न ही मंच का बोध रहता है। बस लय भाव और एक प्रवाह रह जाता है। कभी लगता है कि बाहर और भीतर का भेद ही मिट गया है और जो कुछ भी हो रहा है, वह अपने आप हो रहा है और आप उसका आनंद ले रहे होते हैं। अगर आप कृष्ण और यशोदा का संवाद दिखा रहे हैं तो आप ही कृष्ण, आप ही यशोदा हो जाते हैं। यह बहुत गहरा आनंद होता है। यह वह पल होता है, जहां कला साधना और अध्यात्म, तीनों एक हो जाते हैं। नृत्य शरीर का संतुलन अभ्यास भी है। इससे स्ट्रेंथ और स्टेमिना बढ़ता है। नृत्य की मुद्राएं शरीर में एक संतुलन उत्पन्न करती हैं और धीरे-धीरे यही संतुलन आपके जीवन जीने के तरीके और व्यवहार में भी आता है। जब आप नियमित रूप से नृत्य करते हैं तो एकाग्रता अपने आप बढ़ने लगती है। मन स्थिर हो जाता है। जीवन में तनाव भी कम होने लगता है। मेरा मानना है कि कला इंसान को सकारात्मक बनाती है। जब आप संगीत के साथ थोड़ी देर लय ताल में थिरकते हैं तो आपकी ऊर्जा अपने आप बदलने लगती है। *

मोबाइल स्क्रीन पर सिमटता सिनेमा
माइक्रो-सीरीज का चढ़ता सूरज!

न्यू ट्रेंड
गौरव द्विवेदी

फिल्म, टीवी सीरियल, वेब-सीरीज और शॉर्ट फिल्म्स के बाद अब माइक्रो-सीरीज का ट्रेंड तेजी से पॉपुलर हो रहा है। इसके पॉपुलर होने की क्या वजहें हैं। यह किस तरह से एंटरटेनमेंट स्टाइल को पूरी तरह बदल रहा है, इस पर एक नजर।

भारत में मनोरंजन की दुनिया एक दिलचस्प मोड़ पर है। सिनेमा अब बड़े पर्दे से निकलकर मोबाइल स्क्रीन में सिमट रहा है। इस बदलाव का सबसे बड़ा चेहरा है माइक्रो-सीरीज और वर्टिकल वीडियो। यह केवल एक ट्रेंड नहीं, बल्कि एक वैश्विक बदलाव है। अनुमान है कि 2025 तक दुनिया के कुल इंटरनेट ट्रैफिक का लगभग 82% वीडियो कंटेंट का रहा, जिसमें शॉर्ट, वर्टिकल वीडियो का दबदबा सबसे ज्यादा था।

बढ़ रहा शॉर्ट वीडियो मार्केटः इंस्टाग्राम और यू-ट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म्स ने देखने की आदत को पूरी तरह बदल दिया है। अब दर्शक 'देखता' नहीं, बल्कि 'स्क्रॉल' करता है, और हर स्क्रॉल में कहानी फिट होनी चाहिए। भारत में इस बदलाव की गति और भी तेज है। एक रिपोर्ट के अनुसार, देश में 100 मिलियन (10 करोड़) से अधिक दर्शक पहले ही माइक्रो-ड्रामा कंटेंट देख रहे हैं। यानी यह अब मनोरंजन की मुख्यधारा बन चुका है। वैश्विक स्तर पर शॉर्ट वीडियो मार्केट का आकार 2026 में लगभग 59 अरब डॉलर आंका जा रहा है, जो 2033 तक बढ़कर 118 अरब डॉलर से ज्यादा का हो सकता है। सिर्फ वर्टिकल वीडियो सेगमेंट ही 2025 में लगभग 67% हिस्सेदारी तक पहुंच चुका है, जो इस फॉर्मेट की ताकत को दर्शाता है।

घरेलू प्लेटफॉर्म्स की बड़ी भूमिकाः भारत में इस उभार के पीछे घरेलू प्लेटफॉर्म्स की बड़ी भूमिका है। 'कुकु टीवी' जैसे प्लेटफॉर्म ने वर्टिकल माइक्रो-ड्रामा को एक नई पहचान दी है। इसके 1.2 करोड़ (12.7 मिलियन) से अधिक डाउनलोड्स हो चुके हैं, जबकि इसके ऑडियो प्लेटफॉर्म 'कुकु एफएम' ने 1 करोड़ से अधिक पेड सब्सक्राइबर्स का आंकड़ा पार कर लिया है। इसी तरह 'मोज' और 'जोश' जैसे भारतीय शॉर्ट वीडियो प्लेटफॉर्म्स ने मिलकर 300 मिलियन (30 करोड़) से अधिक यूजर इकोसिस्टम तैयार कर लिया है। नई श्रेणी के प्लेटफॉर्म जैसे 'क्विक टीवी', 'टुकटुकी', 'कटिंग' भी 2–5 मिनट के एपिसोड्स के साथ तेजी से उभर रहे हैं, और कुछ रिपोर्ट्स के अनुसार हाल के महीनों में ही 150 मिलियन व्यूअर्स ने माइक्रो-सीरीज कंटेंट देखा, जबकि रोजाना एपिसोड व्यूज 100 मिलियन तक पहुंच गए।

अन्य देशों में भी बढ़ रही पॉपुलैरिटीः चीन इस बदलाव का सबसे बड़ा उदाहरण है, जहां 'डुआंजू' (माइक्रो ड्रामा) इंडस्ट्री तेजी से एक समानांतर फिल्म उद्योग बन चुकी है। वहीं अमेरिका में भी 'ड्रामा बॉक्स' जैसे प्लेटफॉर्म्स करोड़ों यूजर्स के साथ पारंपरिक ओटीटी को चुनौती दे रहे हैं। इतना ही नहीं, यू-ट्यूब शॉर्ट्स पर रोजाना दो सौ अरब व्यूज तक का आंकड़ा सामने आता है, जो इस बदलाव की गति को दर्शाता है।

तेजी से बढ़ रहा ट्रेंडः भारत में यह ट्रेंड और तेजी से बढ़ रहा है। सस्ते डेटा, 5जी और स्मार्टफोन के प्रसार ने इसे जन-आंदोलन बना दिया है। टियर-2 और टियर-3 शहरों में युवा दर्शक अब माइक्रो-सीरीज को न केवल देख रहे हैं, बल्कि बना भी रहे हैं। आर्थिक दृष्टि से भी यह मॉडल बेहद आकर्षक है। जहां एक

पारंपरिक टीवी शो के एक एपिसोड पर करोड़ों रुपए खर्च होते हैं, वहीं एक वर्टिकल सीरीज का पूरा सीजन कुछ लाख में बन सकता है। हालांकि, इस तेजी के साथ कुछ खतरे भी हैं। जैसे-कहानियों की गहराई कम हो रही है और एल्गोरिदम यह तय कर रहा है कि क्या चलेगा? फिर भी, यह मानना होगा कि यह बदलाव अस्थायी नहीं है। यह भारतीय मनोरंजन उद्योग के नए ढांचे की नींव है। आने वाले समय में बड़ी फिल्में और वेब-सीरीज पहले माइक्रो-फॉर्मेट में अपनी लोकप्रियता साबित करेंगी। अब सिनेमा देखा नहीं जाता, स्क्रॉल किया जाता है। और जो स्क्रॉल में फिट हो जाए, वही नया सिनेमा है। *

(लेखक फिल्म पॉलिसी के जानकार हैं)

गीत / कृष्ण बिहारी

सबकी अपनी सीमाएं हैं

कोई साथ कहां तक देगा
सबकी अपनी सीमाएं हैं,
हर कोई रीता-रीता है
कहने को सभी अघाए हैं।
अतृप्त जिंदगी छूंछी-सी
ऊपर से दिखती सजी-धजी
गर पास बुलाकर बैठा लो
तो लगती कितनी बुझी-बुझी
भ्रम के साए में सभी यहां
मुरदा पहचान बनाए हैं।
पेट काट जो तन ढंकती थी
वही भरे पेट अब नंगी है
नाच-नाचकर कहे सभ्यता
दुनिया यह रंग-बिरंगी है
रंग-रोगन से पुते हुए सब
भीतर-भीतर मुरझाए हैं।
जब देह में मन अनुपस्थित हो
औ' रूप जिए केवल पीड़ा
मेले में भी तनहाई हो
औ' प्राण हीन हो हर क्रीड़ा
तो बात समझनी क्या मुश्किल
अपनों से भेद छिपाए हैं।
कोई साथ कहां तक देगा
सबकी अपनी सीमाएं हैं।

व्यंग्य / सूर्य कुमार पांडेय

शातिर अंतरात्मा गब्बर की

गब्बर की अंतरात्मा ने झकझोरते हुए कहा, 'तू स्वभाव से डकैत है, डकैत ही रहेगा। इसलिए स्थान-परिवर्तन कर ले और अपने कर्म-परिवर्तन को यथावत बना रहने दे। चल, सम्मानित जिंदगी जीने की राह पकड़ ले!'

जब वही धंधा शहर में रह कर भी किया जा सकता है, तो बीहड़ में छिपकर क्यों रहा जाए?' एक रोज गब्बर की शातिर अंतरात्मा से आवाज आई, 'रे मूर्ख, परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। तू देखता ही होगा कि राजनेता आए दिन अपनी दलीय निष्ठाएं बदलते रहते हैं। बयानवीर अपने बयान बदल लेते हैं। सरकार में मंत्रियों के विभाग बदल जाते हैं। अधिकारियों और कर्मचारियों के तबादले होते रहते हैं। जिनका स्थानांतरण किया जाता है, वे जब दूसरी जगहों पर तैनाती पाते हैं तो क्या उनके गुण-धर्म बदल जाते हैं? भ्रष्टाचारी को कहीं भी भेज दो, वह भ्रष्टाचारी ही रहेगा। उसे सदाचारियों की भीड़ के बीच बैठा दो, तब भी वह स्वयं तो सुधरेगा नहीं, वहां के लोगों को अपने जैसा जरूर बना लेगा। यह काम तो तू भी कर सकता है। तू स्वभाव से डकैत है, डकैत ही रहेगा। इसलिए स्थान-परिवर्तन कर ले और अपने कर्म-परिवर्तन को यथावत बना रहने दे। चल, सम्मानित जिंदगी जीने की राह पकड़ ले!'

जब गब्बर की अंतरात्मा से यह आवाज बार-बार उठने लग गई, तब उसने एक शाम अपने गैंग के सदस्यों का एक पैनल बनाया और स्वयं एंकर की भूमिका में रहते हुए एक धुआंधार बहस की। एक बहसबाज दस्यु ने कहा, 'डकैती डालना घृणित कार्य है। अब हमें वैकल्पिक रोजगार की तलाश करनी चाहिए।' यह सुनकर दूसरे दुर्दांत बहसबाज ने घोर आपत्ति की, 'तुम बकवास कर रहे हो। डकैती तो हमारा पवित्र धर्म है। कोई हमारे धर्म को लेकर ऐसी बात कहेगा, तो मैं उसका सिर कलम कर दूंगा।' तीसरे बहसबाज डकैत ने कहा, 'अब डकैती के धंधे में पहले जैसी बरकत नहीं रही। मैं कल सरदार के आदेश पर एक गांव में गया था। वहां पर पहले हमारे जाते ही लोग अपने घरों से अनाज की बोरियां लाकर हमारे चरणों में धर दिया करते थे। इस बार मुझे पता चला कि सभी लोग खुद खाली थैले लेकर पांच किलो अनाज पाने के लिए सरकारी गल्ले की दुकानों पर गए हुए थे।' चौथे बहसबाज डाकू ने कहा, 'सरदार, अब आप ही बताइए, आपका निर्णय ही हमें दिशा दिखला सकता है।'

गब्बर ने बहस का समापन करते हुए कहा, 'मैंने तुम सबकी बातें ध्यानपूर्वक सुनी हैं और इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि हमें अपना यह डकैती वाला धंधा छोड़ देना चाहिए और दूसरे वैकल्पिक रास्ते तलाशने चाहिए। हम इस घटाटोप जंगल में अड्डे बदलते-बदलते आजिज आ चुके हैं। ऊपर से हमेशा पुलिस का डर बना रहता है। साथ में मुखबिरी के खतरे तो हैं ही। क्या पता, अपने ही गैंग का कौन बंदा कब दगा दे जाए और हम सब एक दिन किसी एनकाउंटर में मार दिए जाएं! क्यों कालिया?' तब कालिया कहने लगा, 'सरदार, मैंने आपका नमक खाया है। घोर महंगाई में आपने हमें नीबू भी खिलाए हैं। आपकी कृपा बनी रहेगी तो हम आपके फार्म हाउस में बैठकर कल पिज्जा-बर्गर भी खाएंगे। वैसे भी यह कोई हमारा पुश्तैनी धंधा तो है नहीं कि इसे छोड़ देने में डकैतों की बिरादरी में हमारी नाक कट जाएगी। हम बीहड़ की जगह शहर में रहकर भी वहां के सम्मानित डकैतों जैसी शानदार जिंदगी जी सकते हैं।' उन सभी की बातें सुनकर गब्बर ने खैनी मलते हुए पूछा, 'अरे ओ सांभा, तू क्यों चुप है? तू भी तो बता कि हमें क्या करना चाहिए?' सांभा बोला, 'सरदार, आपने जो फैसला लिया है, वही सही है।'

इसके बाद उस इलाके में अपने बर्बर आतंक के चलते कुख्यात हो चुका गब्बर अब एक शरीफ डकैत बन चुका है। यूं भी कुख्यात और विख्यात होने में कोई खास अंतर नहीं होता है। मात्र जंगल और नगर का फर्क होता है। तो गब्बर और उसका गैंग अब सम्मानित डकैत बन चुके हैं। अब उस पर सरकारें इनाम नहीं घोषित करतीं हैं। अब वह खुद सरकारों को मदद-इमदाद करता है। अब पुलिस भी उसे ठोकने की फिराक में नहीं रहती, अलबत्ता वह उसे ही सलाम ठोंकती है। लेकिन कल गब्बर के साथ एक बुरी बात हो गई। उसके घर पर सीबीआई और ईडी का छापा पड़ गया। उसकी हवेली पर बुलडोजर चल गया। गब्बर अपने पूरे गैंग के साथ जेल में है और अपनी शातिर अंतरात्मा को तलाश रहा है। वह मिल जाए तो उसे गोली मार देगा। लेकिन गब्बर यह बात नहीं जानता है कि उसकी अंतरात्मा तो डकैती के धंधे में आते ही मर चुकी थी। यह उसका आंतरिक भय था, जिसको वह गलती से अपनी शातिर अंतरात्मा समझ बैठा था। *

लघुकथा / शीला श्रीवास्तव

एहसास

सड़क पर दूर से ही पुलिस वालों की चेकिंग होती देख कमलेश ने अपनी मोटरसाइकिल वापस घुमा ली। 'क्या हुआ, गाड़ी क्यों वापस घुमा रहे हो?' पीछे बैठे दोस्त ने पूछा। 'आगे चेकिंग चल रही है। इन पुलिस वालों को कोई काम धंधा है नहीं। जब देखो चौराहे पर खड़े होकर चेकिंग करना शुरू कर देते हैं। हेलमेट क्यों नहीं पहना? लाइसेंस कहां है? बिना नंबर की गाड़ी कैसे चला रहे हो? ढेरों सवाल पूछने लगते हैं। उनको तो बस लोगों को तंग करना होता है और कुछ नहीं।' कमलेश झुंझलाते हुए बोला। 'ऐसा क्यों बोल रहे हो? वो तो बेचारे अपनी ड्यूटी करते हैं।' दोस्त ने कमलेश को समझाने की कोशिश की। 'अरे, काहे की ड्यूटी! इनको तो बस अपनी जेब भरनी होती है और कुछ नहीं।' कमलेश खीझ भरे स्वर में बोला।

इस घटना के कुछ दिनों बाद कमलेश के बेटे का एक्सीडेंट हो गया। बिना नंबर वाली गाड़ी चला रहे किसी टेंपो ड्राइवर ने पीछे से उनके बेटे की बाइक पर जोरदार टक्कर मार दी थी। हेलमेट न पहनने की वजह से उनके बेटे के सिर पर गंभीर चोट लग गई थी। 'ये पुलिस वाले आखिर करते क्या हैं? बिना लाइसेंस, नंबर वाले अवैध वाहनों के खिलाफ, चेकिंग करके उन पर नियंत्रण क्यों नहीं करते?' कमलेश की पत्नी बिलखते हुए अपने पति से पूछ रही थी। आज कमलेश को अपनी उस दिन की गलती का एहसास हुआ। अब उसे पुलिस वालों की चेकिंग का महत्व समझ में आ गया था। *

पुस्तक चर्चा / कुलदीप सिंह भाटी

ग्लैमर की दुनिया का किस्सा

कथा साहित्य में किस्सागोई का एक विशिष्ट स्थान रहा है। कारण इसका यह है कि किस्सागोई में बात से बात निकलती चली जाती है। इस तरह इसमें रोचकता के साथ ही साथ जिज्ञासा भी बनी रहती है। वरिष्ठ कथाकार और शायर हबीब कैफी का नया उपन्यास 'काला, धौला और रंगीन' इसी किस्सागोई शैली में लिखा गया एक उम्दा उपन्यास है। इस कथा की मुख्य पात्र पलक है। फिल्मी दुनिया की यह सफल अभिनेत्री, जब एक साहित्यकार के आगे खुलने लगती है तो प्रायः बंद ही रहने वाली यह स्त्री जिंदगी की कई परतें खोलती चली जाती है। पता चलता है कि एक नामी राजघराने से ताल्लुक रखने वाली यह अभिनेत्री अपने क्षेत्र, फिल्मी दुनिया के साथ ही साहित्य, कला और संगीत आदि से भी बड़ी हद तक लगाव और जुड़ाव रखती है। संवेदनशील अभिनेत्री पलक इस बीच सहज ही अपनी जिंदगी की परतें भी खोलती चली जाती है तो पता चलता है कि एक्स्ट्रा जूनियर आर्टिस्ट से नामी अभिनेता बने, समीर से यह गहरे प्रेम में है। मानवीय गुणों से संपन्न नैसर्गिक अभिनेता समीर मस्त मौला स्वभाव के कारण पलक के प्रेम का ठीक-ठीक जवाब नहीं दे पाता। समय अपनी गति से गुजरता जाता है और एक दिन अचानक ही समीर दुनिया छोड़ जाता है। उपन्यास के अंत में पाठक पलक की सच्ची और गहरी मोहब्बत महसूस करते हैं तो उनका दिल भी भर आता है।

लगभग अपठनीयता के इस दौर में यह उपन्यास न केवल स्वयं को पढ़वा ले जाता है, अपितु एक गहरी कसक भी पाठक के मन में छोड़ जाता है। उपन्यास के भाषा की रवानगी भी इसकी पठनीयता को बनाए रखने में बड़ी भूमिका निभाती है। *

पुस्तकः काला, धौला और रंगीन (उपन्यास), **लेखकः** हबीब कैफी, **मूल्यः** 299 रुपए, **प्रकाशकः** कौटिल्य बुक्स, दिल्ली

केरल के सबसे प्रसिद्ध धार्मिक-सांस्कृतिक उत्सवों में से एक है एथडुआ पेरुनल उत्सव। केरल के लोकजीवन से जुड़े इस पर्व के प्रति कुछ अन्य राज्यों एवं विदेशी पर्यटकों के बीच भी काफी लगाव है। इस उत्सव से जुड़ी कुछ अनोखी-रोचक बातें आप जरूर जानना चाहेंगे।

सांस्कृतिक उत्सव

धीरज बसाक

धर्म-संस्कृति-सामाजिक समरसता का संदेश देता एडथुआ पेरुनल उत्सव

केरल की सांस्कृतिक पहचान सिर्फ इसके मंदिरों और पारंपरिक उत्सवों तक सीमित नहीं है। यहां के ईसाई समुदाय के पर्व भी उतने ही भव्य और जीवंत हैं तथा लोकजीवन से जुड़े हुए हैं। इन्हीं में से एक एडथुआ पेरुनल उत्सव है, जो मुख्यतः सेंट जॉर्ज को समर्पित है। इसे केवल केरल के महत्वपूर्ण ईसाई धार्मिक आयोजनों में ही नहीं गिना जाता बल्कि यह दूसरे दक्षिणी राज्यों के ईसाई समुदायों के साथ-साथ दुनिया भर के सांस्कृतिक पर्यटकों के लिए भी महत्वपूर्ण आयोजन है। एडथुआ पेरुनल उत्सव हर साल अप्रैल के अंत से मई की शुरुआत तक लगभग 10 दिनों तक मनाया जाता है। इस साल यह 27 अप्रैल से 7 मई 2026 तक मनाया जाएगा।

हर दिन अलग-अलग आयोजन: इस उत्सव के दौरान चर्च परिसर और उसके आस-पास के पूरे क्षेत्र में एक विशाल मेले का आयोजन होता है। हजारों श्रद्धालु आस्था और श्रद्धा से इस उत्सव में भाग लेते हैं। बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक पर्यटक भी इसका हिस्सा बनने के लिए देश-विदेश से आते हैं। उत्सव की शुरुआत विशेष प्रार्थनाओं और ध्वजारोहण से होती है। इसके बाद हर दिन अलग-अलग धार्मिक अनुष्ठान, जुलूस और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। अंतिम दिन का जुलूस या प्रोसेशन सबसे भव्य होता है, जिसमें सेंट जॉर्ज की प्रतिमा को सुसज्जित रथ पर निकालकर पूरे गांव में घुमाया जाता है। इस उत्सव के दौरान एक तरफ प्राचीन अनुष्ठान होते हैं, वहीं दूसरी ओर आधुनिक व्यवस्थाएं भी आयोजन का हिस्सा होती हैं।

आस्था एवं सामूहिक विश्वास का संगम: एडथुआ पेरुनल का धार्मिक महत्व भी खूब है, क्योंकि सेंट जॉर्ज के प्रति लोगों में बहुत श्रद्धा है। श्रद्धालुओं के मुताबिक इस उत्सव में भाग लेने से उनकी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। विशेषकर बीमारियों और मानसिक कष्टों से मुक्ति मिलती है। इस उत्सव में हिस्सा लेने आए लोग अपनी तरह-तरह की मन्नतें मांगते हैं और उनके पूरे होने पर सेंट जॉर्ज को धन्यवाद देने के लिए बार-बार इस उत्सव में शामिल होने का संकल्प लेते हैं। इसलिए यह पारंपरिक आयोजन व्यक्तिगत आस्था और सामूहिक विश्वास का भी संगम बन जाता है।

केरल की सांस्कृतिक विशिष्टता का दर्शन: एथडुआ पेरुनल, धार्मिक के साथ-साथ एक सांस्कृतिक उत्सव भी है, इसलिए यह केरल की सार्वभौमिक सह-अस्तित्व की भावना को दर्शाता है। इसमें दूसरे कई उत्सवों की तरह सजे-धजे हाथियों के साथ जुलूस निकाला जाता है, जो केरल के विशिष्ट उत्सवों की सबसे खास पहचान है। लोग पारंपरिक संगीत और लोकनृत्य का लुत्फ उठाते हैं। स्थानीय बैंड, चर्च संगीत और लोकनृत्य इस उत्सव को विशिष्टता प्रदान करते हैं। इस उत्सव के दौरान रात के समय भव्य आतिशबाजी के नजारे भी देखने को मिलते हैं, जो दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं।

आर्थिक दृष्टि से भी है महत्वपूर्ण: इस उत्सव का स्थानीय अर्थव्यवस्था के साथ भी एक बेहद गहरा और सकारात्मक रिश्ता है। उत्सव के दौरान अलग-अलग राज्यों एवं विदेशों से आए पर्यटक यहां की अर्थव्यवस्था में अपना योगदान देते हैं। अलग-अलग आजीविकाओं से जुड़े लोगों को उत्सव के दौरान रोजगार प्राप्त होता है या विशेष आय प्राप्त होती है।

विविधता में एकता का संदेश: एडथुआ पेरुनल उत्सव की एक अनोखी विशेषता इसकी सामाजिक समरसता है। यह उत्सव धार्मिक सीमाओं से परे जाकर लोगों को आपस में जोड़ता है, विभिन्न धर्मों और समुदायों के लोग मिलकर उत्सव मनाते हैं। ऐसे में यह एकता में विविधता का जीवंत उदाहरण बन जाता है। यह उत्सव इस बात को भी दर्शाता है कि बहुरंगी भारतीय संस्कृति में गहरा साझा भाव भी है। केरल जैसे राज्य में जहां साक्षरता और सामाजिक जागरूकता उच्च स्तर पर है, ऐसे आयोजन समाज को अधिक मजबूत बनाते हैं। आज के समय में जब समाज में विभाजन और तनाव की खबरें अक्सर आती रहती हैं, एडथुआ पेरुनल जैसे उत्सव हमें सकारात्मक संदेश देते हैं। यह उत्सव सिखाता है कि धर्म और संस्कृति लोगों को जोड़ने का माध्यम हो सकते हैं, न कि उन्हें एक-दूसरे से अलग करने का।

कुल मिलाकर एडथुआ पेरुनल उत्सव सिर्फ धार्मिक भाव का पर्व नहीं है, यह आस्था, संस्कृति और सामाजिक एकता का जीवंत प्रतीक है। यह उत्सव केरल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है, जिसमें विभिन्न धर्मों और परंपराओं का सुंदर संगम देखने को मिलता है। एडथुआ पेरुनल उत्सव श्रद्धालुओं के लिए आस्था का केंद्र है, वहीं यह भारतीय संस्कृति की उस व्यापक सोच का भी प्रतिनिधित्व करता है, जो विविधता में एकता को सबसे बड़ा मूल्य मानती है। *

एडथुआ पेरुनल उत्सव की प्रमुख विशेषताएं

- यह अलप्पुझा (केरल) के एडथुआ गांव में मनाया जाता है और इसका मुख्य स्थल सेंट जॉर्ज फॉरेन चर्च है।
- यह हर साल 10 दिनों तक अप्रैल के अंत और मई की शुरुआत में मनाया जाता है।
- सेंट जॉर्ज को समर्पित इस सांस्कृतिक उत्सव की सबसे खास विशेषता है, इसका भव्य धार्मिक जुलूस। इस जुलूस में सजे-धजे हाथियों की परेड देखने को मिलती है, साथ ही इस दौरान पारंपरिक संगीत और नृत्य की छटा बिखरती है तथा आतिशबाजी का भी खूब रंग-बिरंगा उत्सव देखने को मिलता है।
- इसमें विभिन्न धर्मों की भागीदारी होती है, इसमें हिस्सा लेने वाले लोगों का एक बड़ा तबका ऐसे आस्थावान लोगों का होता है, जो अपनी असाध्य बीमारियों से मुक्ति पाने की इच्छा से यहां आते हैं और बीमारियों से मुक्ति पाने के लिए मन्नतें मांगते हैं।

मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान मेरे मरीजों की मुस्कान है

प्रेरक व्यक्तित्व

डॉ. पुरुषोत्तम लाल

पंजाब के मोगा जिले के एक छोटे से गांव से ताल्लुक रखने वाले डॉक्टर पुरुषोत्तम लाल का शुरुआती जीवन बहुत संघर्षपूर्ण रहा। लेकिन अपने अथक परिश्रम और समाज के लिए कुछ करने के संकल्प के चलते मेडिकल क्षेत्र में उन्होंने अद्वितीय मुकाम हासिल किया। डॉक्टर पुरुषोत्तम भारत में इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजी के फादर कहे जाते हैं। वह देश के दूसरे सबसे बड़े नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से विभूषित हैं। डॉ. पुरुषोत्तम लाल के प्रेरक जीवन का सफर उन्हीं की जुबानी।

आसान नहीं था आरंभिक जीवन: मेरा बचपन बहुत संघर्षपूर्ण था। हमारा पूरा ध्यान बस इस बात पर होता था कि घर कैसे चले और पढ़ाई कैसे पूरी हो? हम सभी भाई एक ही लैंप की हल्की रोशनी में पढ़ते थे, जिसकी चिमनी भी टूटी हुई होती थी। लेकिन मेरे अंदर कहीं एक आग जरूर थी, कुछ अलग करने की चाह। मन में यही ख्याल आता था कि जिंदगी में कुछ ऐसा करना है, जिससे अपने परिवार का जीवन बदल सकूं और समाज के लिए भी कुछ कर सकूं। उन्हीं कठिन परिस्थितियों में पले छोटे-छोटे सपने ही मेरी सबसे बड़ी ताकत बने और मुझे इस मुकाम तक लेकर आए।

परिश्रम से पाया मनचाहा मुकाम: मेरा पूरा सफर संघर्ष और मेहनत से भरा रहा है। अपनी लगन और समर्पण के दम पर मैंने नेशनल मेरिट स्कॉलरशिप हासिल की, जो मेरे लिए एक नई उम्मीद लेकर आई। इसी के सहारे मैं अमृतसर मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की पढ़ाई के लिए पहुंचा। वहां भी दिन-रात मेहनत करता रहा और हर चुनौती को एक अवसर की तरह लिया। वर्ष 1975 में अपनी क्लास में टॉप किया। डॉक्टर बनने के बाद मैंने इसे केवल एक पेशा नहीं, बल्कि सेवा का माध्यम माना। इसके बाद आगे की पढ़ाई के लिए अमेरिका गया, जहां कार्डियोलॉजी में उच्च प्रशिक्षण लिया। वहां के प्रतिष्ठित संस्थानों में काम करते हुए मैंने बहुत कुछ सीखा, खुद को निखारा।

जन सेवा के लिए देश लौट आया: अमेरिका में मुझे बहुत कुछ मिला, बेहतर सुविधाएं, सम्मान और सीखने के अनगिनत अवसर। लेकिन दिल के किसी कोने में हमेशा एक खालीपन था। जब मैं भारत आता और यहां के मरीजों की हालत देखता, खासकर वे लोग जो पैसों की कमी के कारण इलाज नहीं करा पाते, तो मन बहुत व्यथित हो जाता था। मुझे लगता था कि मेरी असली जरूरत यहां है, अपने देश में है। इसलिए एक दिन मैंने तय किया कि अब वापस अपने देश लौटना है।

मेट्रो हॉस्पिटल्स की शुरुआत: मेरी सोच हमेशा से बहुत मानवीय रही है। तभी मैंने ठान लिया कि एक ऐसा अस्पताल बनाऊंगा, जहां इलाज की गुणवत्ता विश्वस्तरीय हो, लेकिन वह आम आदमी की पहुंच से बाहर न हो। मेट्रो हॉस्पिटल्स की शुरुआत इसी सोच और भावना के साथ हुई, सेवा, संवेदना और सुलभ इलाज के उद्देश्य से।

इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजी में योगदान: मैंने हमेशा कोशिश की कि मरीज को कम से कम तकलीफ हो और इलाज ज्यादा सुरक्षित और प्रभावी हो। अगर बिना बड़ी सर्जरी के किसी की जान बचाई जा सके, तो इससे बड़ी खुशी क्या हो सकती है। जब मैं देखता हूं कि जिन तकनीकों को हमने अपनाया और आगे बढ़ाया, वे आज हजारों लोगों की जिंदगी आसान बना रही हैं, तो दिल को सुकून मिलता है।

मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान: पद्म भूषण, पद्म विभूषण जैसे सम्मान मिलना निश्चित रूप से गर्व की बात है। लेकिन अगर दिल से कहूं, तो मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान मेरे मरीजों की मुस्कान है। जब कोई मरीज स्वस्थ होकर अपने परिवार के पास लौटता है और आंखों में खुशी के आंसू लेकर धन्यवाद देता है, तो वह किसी भी पुरस्कार से कहीं ज्यादा अनमोल होता है।

युवा डॉक्टरों को संदेश: मैं युवाओं से यही कहना चाहूंगा कि डॉक्टर बनना सिर्फ एक करियर नहीं, बल्कि एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। मरीज आपके पास उम्मीद और विश्वास लेकर आता है। इसलिए हमेशा सीखते रहें, खुद को अपडेट रखें और ईमानदारी से काम करें। सबसे जरूरी बात, अपने अंदर इंसानियत और संवेदनशीलता को जिंदा रखें। तकनीक और ज्ञान आपको एक अच्छा डॉक्टर बना सकते हैं, लेकिन आपकी संवेदना ही आपको महान डॉक्टर बनाती है।

सफलता के मायने: मेरे लिए सफलता का मतलब सिर्फ नाम, प्रसिद्धि या पुरस्कार नहीं है। असली सफलता तब होती है, जब आप किसी की जिंदगी में सकारात्मक बदलाव ला सकें। यही सच्ची सफलता है, जो दिल को संतोष देती है। *

प्रस्तुति: हरिभूमि फीचर्स

दुनिया भर में प्रचलित अलग-अलग नृत्य कलाओं के महत्व को रेखांकित करने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 29 अप्रैल को अंतरराष्ट्रीय नृत्य दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर भारत की सांस्कृतिक विविधता को प्रदर्शित करते विभिन्न प्रदेशों के प्रमुख लोकनृत्यों के बारे में जानिए।

सांस्कृतिक विविधता के प्रतीक विभिन्न प्रदेशों के लोकनृत्य

महाराष्ट्र का लोकनृत्य-लावणी

असम का लोकनृत्य-बिहू

हिमाचल प्रदेश का लोकनृत्य-नाटी

परंपरा

शिखर चंद जैन

भारत विविधताओं का देश है। यहां की यह विविधता सिर्फ भाषा, खान-पान या रहन-सहन तक सीमित नहीं है, बल्कि यहां के लोक नृत्यों में भी रची-बसी है। लोक नृत्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि आम जनमानस के उल्लास, उनकी धार्मिक आस्था और ऋतुओं के चक्र का जीवंत उत्सव भी होते हैं।

बिहू (असम): असमिया नववर्ष (रंगाली बिहू) के अवसर पर किया जाने वाला यह नृत्य अपनी तेज गति और हाथों के संचालन के लिए प्रसिद्ध है। यह नृत्य हाथों के फुर्तीले संचालन और पारंपरिक 'मेखला चादर' वेशभूषा के लिए भी जाना जाता है। यह नृत्य नई फसल तैयार होने की खुशी और प्रकृति के प्रति आभार ज्ञापन करने का प्रतीक भी होता है।

नाटी (हिमाचल प्रदेश): हिमाचल का सबसे लोकप्रिय लोक नृत्य 'नाटी' कुल्लू और शिमला क्षेत्रों में बड़े उत्सवों के दौरान सामूहिक रूप से किया जाता है। सैकड़ों लोग एक-दूसरे का हाथ पकड़कर लंबी श्रृंखला बनाते हैं और स्थानीय वाद्ययंत्रों की धुन पर कदम से कदम मिलाकर झूमते हैं। इसने 'सबसे बड़े लोक नृत्य' के रूप में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी अपना नाम दर्ज कराया है।

भांगड़ा (पंजाब): पंजाब की मिट्टी की खुशबू और किसानों के उल्लास का प्रतीक है भांगड़ा लोकनृत्य। मुख्य रूप से बैसाखी के पर्व और फसल कटाई के समय किया जाने वाला यह नृत्य अपनी ऊर्जा के लिए पूरी दुनिया में मशहूर है। ढोल की थाप पर रंगीन पगड़ी और लुंगी पहने गबरू जब 'बल्ले-बल्ले' कहते हुए थिरकते हैं, तो दर्शकों के पैर भी अपने आप थिरकने लगते हैं।

पंजाब का लोकनृत्य-भांगड़ा

रासलीला (उत्तर प्रदेश): ब्रज क्षेत्र का यह प्रसिद्ध नृत्य भगवान कृष्ण और राधा के प्रेम और उनकी लीलाओं पर आधारित है। ब्रज की धरती मथुरा-वृंदावन से उपजी 'रासलीला' भगवान श्री कृष्ण और गोपियों के दिव्य प्रेम की कहानी है। इसमें नर्तक अपनी भाव-भंगिमाओं से कृष्ण की बाल लीलाओं और रास को प्रदर्शित करते हैं, जो दर्शकों को सीधे भक्ति की दुनिया में ले जाता है।

घूमर (राजस्थान): राजपूताना आन-बान और शान का प्रतीक 'घूमर' को 'राजस्थान की आत्मा' कहा जाता है। अपनी शालीनता और भव्यता के लिए जाना जाने वाला यह नृत्य, भील जनजाति से आरंभ हुआ और बाद में राजपूताना घरानों की पहचान बना। इसमें महिलाएं बड़े घेरे वाले घाघरा पहनकर गोल-गोल घूमती हैं, जिससे एक सुंदर घेरा बनता है। इसकी धीमी लय और हाथ के सधे हुए संचालन इसे बेहद आकर्षक बनाते हैं।

लावणी (महाराष्ट्र): महाराष्ट्र की कला परंपरा का गौरव 'लावणी' पारंपरिक नृत्य है, जो अपनी लयबद्ध ताल और ढोलकी की थाप के साथ किया जाता है। इसमें महिलाएं नौवारी साड़ी पहनती हैं। नौवारी 9 गज की साड़ी होती है। इस नृत्य के दौरान गाए जाने वाले गीत अक्सर समाज, राजनीति और प्रेम पर आधारित होते हैं।

कर्नाटक का लोकनृत्य-यक्षगान

यक्षगान (कर्नाटक): दक्षिण भारत का 'यक्षगान' एक प्राचीन और जटिल नृत्य कला है। यह केवल नृत्य नहीं, बल्कि एक संपूर्ण नाटक है, जिसमें भारी वेशभूषा, चेहरे पर चटकीला श्रृंगार और संवादों का प्रयोग होता है। इसकी कहानियां मुख्य रूप से हिंदू महाकाव्यों पर आधारित होती हैं, जो रात भर खुले मैदानों में प्रदर्शित की जाती हैं। *

यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल भारतीय नृत्य

भारत की कुछ लोकप्रिय नृत्य शैलियों को यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत में शामिल किया गया है। ये हैं-

गरबा (गुजरात): नवरात्रि के नौ दिनों में देवी दुर्गा की प्रतिमा या 'दीप गर्भ' के चारों ओर गोल घेरा बनाकर किया जाने वाला यह नृत्य शक्ति की उपासना का एक माध्यम एवं एकता का प्रतीक है। 'गरबा' के दौरान रंग-बिरंगी चनिया-चोली और कुर्तों में सजे लोग तालियों की लय पर जिस तरह समन्वय बिठाते हैं, वह अद्भुत होता है।

छऊ (झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल): यह एक अर्ध-शास्त्रीय मुखौटा नृत्य है, जिसमें मार्शल आर्ट, कलाबाजियां और लोक परंपराओं का मिश्रण होता है। इसमें रामायण और महाभारत जैसी पौराणिक कथाओं को नृत्य के माध्यम से जीवंत किया जाता है।

कालबेलिया (राजस्थान): राजस्थान के कालबेलिया समुदाय द्वारा किया जाने वाला यह नृत्य अपनी लचीली मुद्राओं के लिए जाना जाता है। काली रंग की कढ़ाई वाली पोशाक पहने महिलाएं बीन और ढफ की धुन पर नागिन की तरह लहराते हुए नृत्य करती हैं। इसकी गति इतनी तेज होती है कि देखने वाले अपनी पलकें झपकाना भूल जाते हैं।

बड़ा पर्दा

हेमंत पाल

दर्शकों को बांधे रखने में सफल रहीं बिना इंटरवल वाली ये फिल्में

वैसे तो दो-ढाई घंटे की फिल्म के बीच में कुछ मिनटों का ब्रेक यानी इंटरवल जरूर होता है। लेकिन बॉलीवुड में कुछ ऐसी फिल्में भी बनी हैं, जिनमें कोई इंटरवल ही नहीं था। बिना ब्रेक वाली ऐसी ही कुछ अलग तरह की फिल्मों पर एक नजर।

हर दौर में कुछ फिल्मकार ऐसे हुए हैं, जो फिल्मों के तयशुदा फॉर्मूले को चुनौती देते हुए नए प्रयोग करते हैं। बिना गाने वाली फिल्में, सीमित किरदारों पर आधारित फिल्म या एक ही रात में घटित होने वाली घटना पर आधारित फिल्म। ऐसे प्रयोग सिनेमा को नई दिशा देते हैं। इन्हीं में से एक खास प्रयोग रहा बिना इंटरवल की फिल्म, जिसमें दर्शकों को बिना रुके पूरी कहानी के साथ बांधकर रखा जाता है। हालांकि फिल्म में इंटरवल इसलिए रखा जाता है कि दर्शक बीच में थोड़ा रिलैक्स हो जाएं और उसकी कहानी को नए सिरे से एंज्वॉय करें। इंटरवल के बहाने फिल्म की कहानी में मोड़ लाने का मौका भी मिलता है। ऐसे में बिना ब्रेक की फिल्म दर्शकों को नए तरीके का अनुभव देती है।

इसलिए किए गए प्रयोग: भारतीय सिनेमा में इंटरवल सिर्फ दर्शकों को रिलैक्स करने का साधन नहीं, बल्कि एक व्यावसायिक व्यवस्था का भी हिस्सा रहा है। लेकिन कुछ निर्देशकों ने महसूस किया कि खासतौर पर सस्पेंस, थ्रिलर और यथार्थवादी फिल्मों में इंटरवल कहानी की गति को तोड़ देता है। ऐसे में अगर फिल्म की लंबाई सीमित रखी जाए और पटकथा कसावट भरी हो, तो बिना ब्रेक दर्शकों को अधिक प्रभावशाली अनुभव दिया जा सकता है। यही कारण है कि हिंदी फिल्म इतिहास में कुछ चुनिंदा फिल्में ऐसी बनीं, जिनमें इंटरवल नहीं रखा गया। वे फिल्में अपनी अलग पहचान बनाने में सफल रहीं।

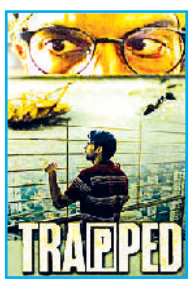

मर्डर मिस्ट्री 'इत्तेफाक': बिना इंटरवल के फिल्म बनाने की दिशा में सबसे चर्चित और शुरुआती प्रयोग 'इत्तेफाक' (1969) के रूप में सामने आया, जिसे यश चोपड़ा ने निर्देशित किया था। यह फिल्म अपने समय से काफी आगे की सोच का परिणाम थी। इस फिल्म में न तो कोई गीत था और न ही इंटरवल। कहानी एक मर्डर मिस्ट्री पर आधारित थी, जो अंग्रेजी नाटक 'साइनपोस्ट टू मर्डर' से प्रेरित थी। राजेश खन्ना ने इसमें एक ऐसे व्यक्ति की भूमिका निभाई, जिस पर अपनी पत्नी की हत्या का आरोप होता है और वह पुलिस से बचने के लिए एक घर में शरण लेता है। उस घर की मालकिन, जिसकी भूमिका नंदा ने निभाई, खुद एक रहस्य छुपाए हुए होती है। फिल्म की कहानी इतनी तेज और रोचक ढंग से आगे बढ़ती है कि दर्शकों को इंटरवल की जरूरत महसूस ही नहीं होती। लगभग डेढ़ घंटे की इस फिल्म को कम समय में शूट किया था, लेकिन इसकी कहानी की कसावट और रोमांच ने इसे यादगार बना दिया।

सामाजिक यथार्थ को दर्शाती 'धोबी घाट': फिल्म 'धोबी घाट' का निर्देशन किरण राव ने किया था। इस फिल्म में आमिर खान मुख्य भूमिका में नजर आए, लेकिन यह पूरी तरह से स्टार-ड्रिवन फिल्म नहीं थी। यह मुंबई शहर के अलग-अलग सामाजिक और भावनात्मक स्तरों पर जी रहे चार लोगों की कहानी है। मोनिका डोगरा, प्रतीक बब्बर और कृति मल्होत्रा द्वारा निभाए गए किरदारों के जरिए फिल्म यह दिखाती है कि सपनों के शहर में हर व्यक्ति अपने-अपने संघर्षों और अधूरी इच्छाओं के साथ जी रहा है। फिल्म का स्वर बहुत ही यथार्थवादी और संवेदनशील है। इसकी सीमित अवधि और बिना इंटरवल के प्रस्तुतीकरण की वजह से दर्शक लगातार पात्रों की दुनिया में डूबे रहते हैं।

क्लॉस्ट्रोफोबिक अनुभव देती 'ट्रैप्ड': विक्रमादित्य मोटवानी द्वारा निर्देशित 'ट्रैप्ड' में राजकुमार राव ने एक ऐसे युवक की भूमिका निभाई है, जो मुंबई के एक सुनसान अपार्टमेंट में फंस जाता है। उसके पास न खाना है, न पानी, न बिजली और न बाहर निकलने का कोई आसान रास्ता। पूरी फिल्म उसी के संघर्ष, भय और जीवित रहने की कोशिशों के इर्द-गिर्द घूमती है। बिना इंटरवल के यह कहानी दर्शकों को उसकी स्थिति में बांध देती है और एक तरह का क्लॉस्ट्रोफोबिक अनुभव देती है। 'ट्रैप्ड' में राजकुमार राव के अभिनय और फिल्म के प्रयोगात्मक स्वरूप की काफी सराहना हुई।

ये फिल्में भी नहीं करतीं ब्रेक की डिमांड: बॉलीवुड में कुछ और फिल्में भी हैं, जिनमें इंटरवल का प्रभाव लगभग समाप्त कर दिया गया या जिन्हें बिना ब्रेक के देखने पर ही इसका असर अधिक महसूस होता है। 'ए वेडनेसडे' जैसी फिल्म अपनी तेज रफ्तार और सीमित समय अवधि के कारण बिना इंटरवल के अधिक प्रभावी लगती है। इसी तरह 'कौन' जिसे राम गोपाल वर्मा ने बनाया, भी सीमित किरदारों और एक ही लोकेशन में घटित होने वाली कहानी के कारण बिना ब्रेक ज्यादा असरदार अनुभव देती है।

आज कितना प्रासंगिक है फिल्मों में इंटरवल: आज जब ओटीटी प्लेटफॉर्म का दौर है और दर्शक बिना किसी व्यवधान के फिल्में देखते हैं, तब इंटरवल की अवधारणा पहले जितनी अनिवार्य नहीं रह गई। अब कहानी की मांग के अनुसार ही फिल्म की संरचना तय की जाती है। फिर भी सिनेमाघरों में इंटरवल का चलन पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ। क्योंकि यह फिल्म प्रदर्शन की परंपरा और व्यवसाय से भी जुड़ा हुआ है। बिना इंटरवल की फिल्में यह साबित करती हैं कि अगर कहानी में दम हो और प्रस्तुति में कसावट हो, तो दर्शकों को बिना किसी ब्रेक के भी पूरी तरह बांधकर रखा जा सकता है। यह प्रयोग भले कम किया गया हो, लेकिन जब भी किया गया, उसने सिनेमा को एक नई दृष्टि दी और यह दिखाया कि कहानी कहने के तरीके हमेशा बदल सकते हैं। *